Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ○

(ऐराफ़ : 201)

(अनुवाद) और अगर तुझे शैतान की तरफ़ से कोई वस्वसा पहुंचे तो अल्लाह की पनाह मांग। निसंदेह वह बहुत सुनने वाला (और) दाइमी इलम रखने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 7
अंक- 49

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 600 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

13 जमादिउल अव्वल 1444 हिज्री कमरी, 08 फ़तह 1401 हिज्री शम्सी, 08 दिसम्बर 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

सदक़ा देने, सिला रहमी करना और माल ख़र्च करने की फ़ज़ीलत

(1436) हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि : मैं ने कहा हे रसूलुल्लाह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को वे बातें मालूम ही हैं जिनके द्वारा से मैं जाहिलियत में गुनाह का अज़ाला किया करता था। अर्थात सदक़ा देना या ग़ुलाम आज़ाद करना या सिला रहमी करना। क्या उनमें भी कोई सवाब होगा? नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : तुम इस्लाम में उन्ही नेकियों की वजह से तो दाख़िल हुए हो जो पहले हुई थीं।

(1443) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : बख़ील और ख़र्च करने वाले की मिसाल उन दो व्यक्तियों की सी है जिन्हों ने दो लोहे के जुब्बे छातियों से हँसलियों तक पहने हुए हों और जो ख़र्च करने वाला होता है जूँ-जूँ ख़र्च करता जाता है वह जुब्बा उसके बदन पर फैलता जाता है या (फ़रमाया :) इतना लंबा हो जाता है कि उसकी उंगलियों को छुपा लेता है और उसके पांव का निशान मिटाता है और बख़ील जो है तो वह जिस वक़्त भी ख़र्च करना नहीं चाहता तो हर हलक़ा अपनी अपनी जगह पर चिमट कर रह जाता है। वह उसे कुशादा करना चाहता है परन्तु वह कुशादा नहीं होता।

(बुख़ारी, भाग 3 किताब अल् ज़कात, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

★ ★ ★

हिदायत और तर्बीयत हक़ीक़ी ख़ुदा का कार्य है

मेरे नज़दीक बच्चों को यूं मारना शिर्क में दाख़िल है

मानो बदमिज़ाज मारने वाला हिदायत और रबूबियत में स्वयं हिस्सेदार बनाना चाहता है

मैं प्रतिबद्ध रूप से अपने नफ़्स के लिए, फिर अपने घर के लोगों के लिए फिर अपने बच्चों के लिए, फिर अपने मुख़लिस दोस्तों के लिए और फिर उन सब के लिए जो इस सिलसिला से जुड़े हैं दुआएं करता हूँ

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

बच्चों को मारना शिर्क में दाख़िल है

एक मर्तबा एक दोस्त ने अपने बच्चे को मारा। आप इस से बहुत मुतास्सिर हुए और उन्हें बुला कर बड़ी दर्द अंगेज़ तक़रीर फ़रमाई और फ़रमाया

"मेरे नज़दीक बच्चों को यूं मारना शिर्क में दाख़िल है। मानो बदमिज़ाज मारने वाला हिदायत और रबूबियत में अपने तईं हिस्सादार बनाना चाहता है। एक जोश वाला आदमी जब किसी बात पर सज़ा देता है तो गुस्से में बढ़ते-बढ़ते एक दुश्मन का रंग इख़तेयार कर लेता है और जुर्म की हद से सज़ा में कोसों तजावुज़ कर जाता है। अगर कोई शख़्स ख़ुद्दार और अपने नफ़्स की बाग को क़ाबू में रखने वाला हो और पूरा मुतहम्मिल और बुर्दबार और बासुकून और बावक़ार हो तो उसे जबकि हक़ पहुंचता है कि किसी मुनासिब वक़्त पर किसी हद तक बच्चे को सज़ा दे या चशमानुमाई करे परन्तु गुस्से वाला और ना-समझ और तैश उल-अकल कदापि सज़ावार नहीं कि बच्चों की तर्बीयत का ज़िम्मेदार हो। जिस तरह और जिस क़दर सज़ा देने में कोशिश की जाती है, काश दुआ में लग जाएं और बच्चों के लिए सोज़-ए-दिल से दुआ करने को एक जाप ठहरा लें। इस लिए कि मातापिता की दुआ को बच्चों के हक़ में विशेष क़बूल बख़्शा गया है।

हुज़ूर की कुछ दुआएं

फ़रमाया : मैं इल्तिज़ामन कुछ दुआएं हर-रोज़ मांगा करता हूँ। प्रथम अपने नफ़्स के लिए दुआ मांगता हूँ कि ख़ुदावंद करीम मुझ से वह काम ले जिससे उसकी इज़्ज़त और जलाल ज़ाहिर हो और अपनी रज़्ज़ाक़ी की पूरी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

द्वितीय फिर अपने घर के लोगों के लिए दुआ मांगता हूँ कि उनसे आँखों की ठंडक अता हो और अल्लाह तआला की प्रसन्नता के मार्ग पर चलें।

तृतीय फिर अपने बच्चों के लिए दुआ मांगता हूँ कि ये सब दीन के ख़ुद्दाम बने।

चार फिर अपने मुख़लिस दोस्तों के लिए नाम नाम के साथ।

पांच : और फिर इन सब के लिए जो इस सिलसिला से जुड़े हैं ख़ाह हम उन्हें जानते हैं या नहीं जानते।

तर्बीयत-ए-औलाद

फ़रमाया : "हराम है अहंकार की गद्दी पर बैठना और पीर बनना उस व्यक्ति को जो एक मिनट भी अपने आश्रित जनों से ग़ाफ़िल रहे। फ़रमाया : हिदायत और तर्बीयत हक़ीक़ी ख़ुदा का कार्य है। सख़्त पीछा करना और एक बात पुर इसरार को हद से गुज़ार देना अर्थात बात-बात पर बच्चों को रोकना और टोकना ये ज़ाहिर करता है कि गोया हम ही हिदायत के मालिक हैं और हम इस को

127वां जलसा सालाना क़ादियान
23, 24, और 25 दिसम्बर 2022 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 127वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 23,24,25 दिसंबर 2022 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन॥

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई. (भाग-4)

30 सितंबर 2022 ई. (शुक्रवार के दिन)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बजकर 50 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ ला कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक मुलाहिज़ा फ़रमाई और हिदायात से नवाज़ा, हुज़ूर अनवर की मुख़्तलिफ़ दफ़्तरी कार्यों को पूरा करने में व्यस्तता रही।

आज जुमअतुल मुबारक का दिन था। आज का यह दिन कई लिहाज़ से एक इतिहासिक दिन है जो हमेशा अहमदियत की तारीख़ में याद रखा जाएगा। आज हुज़ूर अनवर के ख़ुतबा जुमा के साथ डाक्टर अलेक्जेंडर डोवी के ज़ायन (zion) मे मस्जिद फ़तह अज़ीम का उद्घाटन हो रहा था। फिर ज़ायन की सरज़मीन से ख़लीफ़तुल मसीह का यह पहला ऐसा ख़ुतबा जुमा है जो एम. टी. ए इंटरनैशनल के ज़रीया सारी दुनिया में बराह-ए-रास्त लाईव नशर हो रहा था।

इससे पूर्व अमरीका के मशरिक़ी हिस्सा वाशिंगटन डी.सी, harrisburg और साउथ के इलाक़ा हेविसटन और मग़रिबी इलाक़ा लास अंजलीज़ से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ख़ुतबात जुमा एम.टी. ए पर लाईव नशर हो चुके हैं।

डाक्टर डोई ने तो यह कहा था कि उसके अपने बसाए हुए शहर ज़ायन से इस्लाम की आवाज़ हमेशा के लिए दबा दी जाएगी। इस्लाम का कोई नाम-लेवा भी नहीं होगा।

आज अल्लाह-तआला के फ़ज़ल से हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा की ज़बान से इलहाम "फ़तह अज़ीम" के जलवों में, न केवल डोई के इस शहर में इस्लाम की आवाज़ गूंज रही है बल्कि यहां से डोई के मुल्क अमरीका में भी यह आवाज़ गूंज रही है और सबसे बढ़ कर यह कि यह आवाज़ यहां से समस्त संसार में, सारी दुनिया में, सम्पूर्ण संसार मे, गाँव गाँव, शहर शहर सुनाई दे रही है। अतः आज इस शहर का चप्पा चप्पा और यहां के दिन रात का लम्हा लम्हा हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त पर गवाही दे रहा है। سبحان اللہ وبحمدہ سبحان اللہ العظیم۔

नमाज़-ए-जुमआ में ज़ायन (zion) के इलावा अमरीका की मुख़्तलिफ़ दूसरी जमाअतों से लोग बड़े लंबे और तवील फ़ासले तै करके शामिल होने के लिए पहुंचे थे। शामिल होने वालों में एक बड़ी संख्या ऐसी थी जो एक हज़ार से अढ़ाई हज़ार मील तक का सफ़र तै करके आई थी। नमाज़-ए-जुमा में शामिल होने वालों की संख्या दो हज़ार से ज़ायद थी।

अमरीका के इलावा बर्तानिया, जर्मनी, स्वीडन, ब्राज़ील, गयाना, सरेनाम, पाकिस्तान, कबाबीर, कैनेडा से जमाअती नुमाइंदगान और दूसरे अहबाब इस मस्जिद के उद्घाटन में शमूलीयत के लिए पहुंचे थे।

प्रोग्राम के मताबिक 1 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ लाए और ख़ुतबा जुमा इरशाद फ़रमाया। (इस ख़ुतबा जुमा का ख़ुलासा अख़बार बदर 6 अक्तूबर 2022 ई. शुमारा नंबर 40 में शाय हो चुका है और उसका मुकम्मल मतन इसी शुमारा में मुलाहिज़ा फ़रमाए :

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह ख़ुतबा जुमा 1 बजकर 50 मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने नमाज़-ए-जुमा के साथ नमाज़-ए-अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

फ़ैमिली मुलाक़ातें और तास्सुरात

प्रोग्राम के मुताबिक़ 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिली मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ। आज शाम के इस सैशन में 32 फ़ैमिलीज़ के 156 अफ़राद ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का शरफ़ पाया। इन सभी फ़ैमिली ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई। हुज़ूर अनवर ने अज़राह-ए-शफ़क़त तालीम हासिल करने वाले विद्यार्थियों को क़लम अता फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट अता फ़रमाएं।

मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ zion की मुक़ामी जमाअतों के इलावा निमंलिखित आठ जमाअतों और मुक़ामात से आई थीं। chicago
st. louis
detroit
oshk osh
milwaukee
miami
los angeles
bay point

शामिल हैं। miami से आने वाली फ़ैमिली 1404 मील, लास एंजलिस से आने वाली 2046 मील और bay point से आने वाली फ़ैमिलीज़ 2142 मील का सफ़र तै करके पहुंची थीं।

आज अक्सर अहबाब मर्द-ओ-महिलाओं की हुज़ूर अनवर के साथ पहली मुलाक़ात थी। उनके चेहरों पर एक ग़ैरमामूली ख़ुशी थी। प्रत्येक के अपने अपने जज़बात थे। मुलाक़ात करके बाहर निकलते तो एक दूसरे को ख़ुशी के आँसूओं के साथ मुबारकबाद देते। अल्लाह तआला उनके लिए यह ख़ुशीयां दाइमी बना दे और ये उन अत्यधिक मुबारक लमहात की हमेशा के लिए हिफ़ाज़त करने वाले हों।

* मुलाक़ात करने वालों में एक दोस्त शब्बीर अहमद साहिब शिकागो से आए थे कहने लगे कि आज हम किस क़दर ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हमें हुज़ूर से मिलने का अवसर मिला है। प्रत्येक इन्सान को ये अवसर नसीब नहीं होता। हमें ये नेअमत और सआदत पाकिस्तान में अल्लाह की ख़ातिर ज़ुलम-ओ-सितम का सामना करने के बाद मिली है।

* एक दोस्त अदील अहमद साहिब डेट्रॉइट से आए थे कहने लगे मैं आज बहुत ख़ुश हूँ और ख़ुशनसीब भी हूँ कि मेरे बच्चों की ख़ुदा के चुने हुए ख़लीफ़ा से मुलाक़ात हुई।

* अंसर हसन साहिब लास से 2046 मील का सफ़र तै करके मुलाक़ात के लिए आए थे। मुलाक़ात के बाद उन्होंने बताया कि साल 2013 ई. में, मैंने एक ख़ाब देखा था कि मैं हुज़ूर अनवर से एक साहिली इलाक़े के क़रीब मिल रहा था। मैंने यह ख़ाब उस वक़्त देखा था जब मैं पाकिस्तान में था और मेरे अमरीका आने का कोई इमकान भी नहीं था। लेकिन अल्लाह तआला ने मुझे अमरीका तक पहुंचा दिया और अब एक साहिली इलाक़े के क़रीब ही मेरी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हुई है। यह अल्लाह तआला का मुझ पर ऐसा फ़ज़ल है कि मैं जितना भी शुक्र अदा करूँ कम है।

* जमाअत शिकागो से मुलाक़ात के लिए आने वाले दोस्त विक़ास अहमद

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

माली क़ुर्बानी करने वालों को अपनी रुहानी हालतों की तरफ़ भी नज़र रखने की बहुत ज़रूरत है तभी अल्लाह तआला के इनामों के हक़ीक़ी वारिस ठहरेंगे

तहरीक-ए-जदीद के 88 वर्ष के कामयाब और बाबरकत अंत और 89 वर्ष के आरम्भ का ऐलान

अल्लाह के फ़ज़्ल से तहरीक-ए-जदीद के माली निज़ाम में जमाअत को 16.4 मिलियन पाऊंडज़ की माली क़ुर्बानी की तौफ़ीक़ मिली जो पिछले साल से ग्यारह लाख पाऊंडज़ ज़्यादा है

अल्लाह तआला ने यह वाज़िह फ़रमाया कि दीन की ख़ातिर तुम जो क़ुर्बानियां करते हो, अपना माल ख़र्च करते हो अल्लाह तआला उस के बदले में इस दुनिया में भी और आख़िरत में भी इनामात से नवाज़ता है, अल्लाह तआला क़र्ज़ नहीं रखता

आज दीनी अग़राज़ की तकमील के लिए अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ को भेजा है और आप द्वारा आज दुनिया में तब्लीग़-ए-इस्लाम और ख़िदमत इन्सानियत का काम हो रहा है

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दुनिया में तक़रीबन हर जगह लजना अपनी संख्या के लिहाज़ से अपना हिस्सा चंदों में अदा करती है और किसी से पीछे नहीं है

अल्लाह तआला न अमीरों से उधार रखता है न ग़रीबों से, हर एक को उस के मुताबिक़ नवाज़ता है

इस वर्ष भी जमाअत जर्मनी दुनिया-भर की जमाअतों में अव्वल नंबर पर है

मुख़्तलिफ़ देशों से ताल्लुक़ रखने वाले मुख़लिस अहमदियों की माली क़ुर्बानियों के ईमान अफ़रोज़ वाक़ियात का वर्णन

विभाग तारीख़-ए-अहमदियत जमाअत यू.के की वेब साइट (www. history. ahmadiyya. uk) का आरम्भ

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 04 नवम्बर 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज नवंबर का पहला जुमा है और हसब-ए-तरीक़ नवंबर के पहले जुमा में तहरीक-ए-जदीद के नए साल का ऐलान किया जाता है और पिछले वर्ष में जो अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्लों की बारिश बरसाई है उसका वर्णन किया जाता है। अतः इस हवाले से आज मैं कुछ कहूँगा। सबसे पहली बात तो यह याद रखनी चाहिए कि हर काम को चलाने के लिए, उसके अख़राजात पूरे करने के लिए माल की ज़रूरत होती है। इस बात की वज़ाहत करते हुए एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हर नबी ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए माल की तहरीक की। (उद्धरित भाग 1पृष्ठ 233 ऐडीशन 1984 ई.) और कुरान-ए-करीम में भी मुख़्तलिफ़ ज़ाविर्यों और पैरायो में मोमिनों को माल की क़ुर्बानी की तरफ़ तवज्जा दिलाई गई है।

अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट फ़रमाया कि दीन की ख़ातिर तुम जो क़ुर्बानियां करते हो, अपना माल ख़र्च करते हो अल्लाह तआला उसके बदले में इस दुनिया में भी और आख़िरत में भी इनामात से नवाज़ता है। अल्लाह तआला क़र्ज़ नहीं रखता।

उदाहरणतः एक जगह अल्लाह तआला ने इस बारे में कि वह किस तरह नवाज़ता है, किस क़दर नवाज़ता है फ़रमाया कि

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۗ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ

(अल्-बक़रा : 262) अर्थात उन लोगों की मिसाल जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं ऐसे बीज की तरह है जो सात आलियां उगाता है। हर बाली में सौ दाने हूँ और अल्लाह जिसे चाहे (इस से भी) बढ़ा कर देता है और अल्लाह वुसअत अता करने वाला (और) दाइमी इलम रखने वाला है।

अतः यह है मिसाल अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करने वाले मोमिनों की कि जो ख़ालिस हो कर अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करते हैं अल्लाह तआला उनके

क़र्ज़ नहीं रखता बल्कि उन्हें इस दुनिया में भी नवाज़ता है और आख़रत में भी नवाज़ता है। इस ज़माने में अल्लाह तआला ने दीन की इशाअत के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ को भेजा है और आप के मानने वालों के ज़िम्मा भी यह ज़िम्मेदारी लगाई है कि इशाअत-ए-दीन के लिए, इस्लाम का पैग़ाम दुनिया में फैलाने के लिए, दुनिया को ख़ुदा-ए वाहिद के हुज़ूर झुकाने के लिए अपना फ़र्ज़ अदा करें और अगर वह ख़ालिस हो कर ऐसा करेंगे तो अल्लाह तआला के फ़ज़्लों और इनामों के वारिस ठहरेंगे। एक रिवायत में आता है, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि नमाज़, रोज़ा और अल्लाह तआला का वर्णन करना अल्लाह तआला के रास्ते में ख़र्च किए गए माल को सात सौ गुना बढ़ा देता है। (सुंन अबी दाऊद, किताब अल्-जिहाद, बाब فی تضعیف الذ کر فی سبیل اللہ عزوجل,हदीस 2498) अर्थात माली क़ुर्बानियां जो तुम करते हो उनके साथ ये चीज़ें भी ज़रूरी हैं। अतः इस हदीस में एक हक़ीक़ी मोमिन का नक़्शा खींच दिया गया है कि एक मोमिन को यही नहीं समझना चाहिए कि सिर्फ माली क़ुर्बानी करके फिर अल्लाह तआला को वह कहे कि मैंने तो इतनी माली क़ुर्बानी की और अपने फ़रमान के मुताबिक़ मुझे अब सात सौ गुना बढ़ा कर दे। नहीं। बल्कि इसके साथ अपनी इबादतों के मयार भी बुलंद करने होंगे, अपने नफ़्स की हालत को भी बेहतर करना होगा। अल्लाह तआला के वर्णन से अपनी ज़बानों को भी तर रखना होगा। व्यर्थ की बातों से परहेज़ करना होगा और ख़ालिस हो कर सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर माली क़ुर्बानी भी करनी होगी फिर अल्लाह तआला इस तरह नवाज़ता है कि कई दफ़ा इन्सान हैरान रह जाता है।

बसा-औक़ात अल्लाह तआला हमारे थोड़े से अम्लों को भी क़बूल फ़रमाते हुए इस तरह नवाज़ता है कि हैरत होती है। यह अल्लाह तआला की ख़ास रहमत है कि इस तरह नवाज़े और इससे फिर अल्लाह तआला की ज़ात पर ईमान बढ़ता है। इस की बातों पर यक़ीन पहले से बढ़ जाता है। लेकिन यह बहरहाल इन्सान की कोशिश होनी चाहिए कि सिर्फ इस बात पर ख़ुश न हो जाए कि मैंने इतनी क़ुर्बानी की है और बाक़ी अमल नहीं भी हैं तो ज़रूर अल्लाह तआला मुझे इनामात से नवाज़ेगा। अतः माली क़ुर्बानी करने वालों को अपनी रुहानी हालतों की तरफ़ भी नज़र रखने की बहुत ज़रूरत है तभी अल्लाह तआला के इनामों के हक़ीक़ी वारिस ठहरेंगे।

अल्लाह तआला हमेशा हक़ीक़ी मोमिनों को नवाज़ता रहा है। इस की बेशुमार मिसालें जमाअत में मौजूद हैं। पहलों की मिसालें सिर्फ हम नहीं देते। पहलों की मिसालें भी हैं कि किस तरह उनको यक़ीन होता था कि अल्लाह तआला नवाज़ेगा और मौजूदा ज़माने की मिसालें भी हैं।

पुराने ज़माने में, पहलों की मिसालों में हज़रत राबिया बसरी का एक वाक़िया वर्णन हुआ है। क्या तवक्कुल था उनका एक दफ़ा घर में बैठी हुई थीं कि बीस मेहमान आ गए और घर में सिर्फ दो रोटियाँ थीं। उन्होंने मुलाज़िमा को कहा कि ये दो रोटियाँ भी जा कर किसी ग़रीब को दे आओ। अल्लाह तआला पर तवक्कुल का भी एक अजीब अंदाज़ है। मुलाज़िमा बड़ी परेशान हुई और उसने ख़्याल किया कि ये नेक लोग भी अजीब बेवक़ूफ़ होते हैं। घर मेहमान आए हुए हैं, जो थोड़ी बहुत रोटी है ये कहती हैं कि ग़रीबों में बांट आओ। अभी वह सोच रही थी, जाने लगी थी या दे आई थी तो थोड़ी देर के बाद बाहर से आवाज़ आई और एक औरत आई। किसी अमीर औरत ने उसे भेजा था। वह अठारह रोटियाँ लेकर आई थी। हज़रत राबिया बसरी ने उसे वापस कर दीं कि ये मेरी नहीं हैं। इस मुलाज़िमा ने फिर कहा कि आप रख लें। हज़रत राबिया बस्री ने कहा कि नहीं। उसने बड़ा ज़ोर दिया कि अल्लाह तआला ने भेजी हैं। उन्होंने कहा नहीं ये मेरी नहीं हैं। इस मुलाज़िमा ने फिर कहा कि रख लें। बहरहाल थोड़ी देर बाद हमसाई जो अमीर औरत थी उसने अपनी मुलाज़िमा को आवाज़ दी कि तुम कहाँ चली गई हो। राबिया बस्री के हाँ तो बीस रोटियाँ लेकर जानी थीं। ये उनकी नहीं हैं, ये तो मैंने किसी और को भेजी थीं। राबिया बस्री कहती हैं कि मैंने जो दो रोटियाँ भेजी थीं तो अल्लाह तआला से सौदा किया था कि वह दस गुना कर के मुझे भेज देगा।

तो दो के बदले में बीस आनी चाहिए थीं। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह वाक़िया बयान किया और कुरान-ए-करीम की मुख़्तलिफ़ आयात का हवाला भी आपने दिया। हवाला देते हुए आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि बाअज़ मुक़ाम पर एक के बदले में दस और बाअज़ में एक के बदले में सात सौ का वर्णन है और ईः बदला नेकी के अवसर और महल के मुताबिक़ है। अर्थात नेकी किस अवसर पर किस तरह की जा रही है और कितनी क़ुर्बानी की जा रही है। क़ुर्बानी करने वाला किस हद तक क़ुर्बानी कर रहा है। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने जैसा कि मैंने कहा हज़रत राबिया बस्री रज़ियल्लाहु अन्हा का यह वाक़िया बयान किया और फ़रमाया कि अल्लाह तआला इस तरह नवाज़ता है लेकिन तुम लोग अल्लाह तआला का इमतेहान लेने की नीयत से हर वक़त यह न करते रहो।

(उद्धरित हक़ाकुल फ़ुरकान, भाग प्रथम, पृष्ठ : 420-421) यह नहीं कि अल्लाह तआला का इमतेहान लेने की नीयत से यह करना शुरू कर दो। हाँ अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस हो कर कभी इस तरह क़ुर्बानी करोगे तो अल्लाह तआला नवाज़ेगा भी। अतः जो लोग अल्लाह तआला के दीन की ख़ातिर देते हैं और अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए देते हैं वह हक़ीक़ी क़ुर्बानी करने वाले हैं। हज़रत राबिया बसरी की मिसाल जबकि ज़ाती मेहमानों की लगती है लेकिन उनके पास भी लोग दीन की ग़रज़ के लिए आते थे। बहरहाल आज दीनी अग़राज़ की तकमील के लिए अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ को भेजा है और आप के ज़रीया आज दुनिया में तब्लीग़ इस्लाम और ख़िदमत इन्सानियत का काम हो रहा है।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत हर साल कई मिलियन पाऊंडज़ इशाअत-ए-लिटरेचर में, मसाजिद के निर्माण में, मिशन हाऊसज़ की तामीर में और दूसरे मन्सूबों पर ख़र्च करती है। यूरोप और तरक़्क़ी याफताह देशों की अक्सर रक़म अफ़्रीक़ा और भारत और दूसरे ग़रीब मुल्कों में ख़र्च होती है। अपने मुल्कों के अख़राजात के इलावा जो ये लोग अपने मुल्कों में इन मक़ासिद के लिए ख़र्च कर रहे हैं और जितनी वुसअत अब कामों में हो चुकी है ये अल्लाह तआला का ख़ास फ़ज़्ल है कि लोगों जमाअत क़ुर्बानियों में बढ़ते हुए इन अख़राजात को भी बावजूद आर्थिक हालात के ख़राब होने के पूरा करते हैं और फिर अल्लाह तआला आज भी उनको अपने सुलूक के नज़्ज़ारे दिखाता है कि किस तरह वह इन क़ुर्बानी करने वालों को नवाज़ता है।

ग़रीब मुल्कों में रहने वालों को भी और अमीर मुल्कों में रहने वालों को भी, हर एक को अपने अपने तजुर्बात होते हैं जो अपनी ज़रूरियात को क़ुर्बान करके अल्लाह तआला की राह में क़ुर्बानियां करते हैं। इस वक़्त में चंद वाक़ियात भी पेश कर देता हूँ जिनसे पता चलता है कि किस तरह अल्लाह तआला इन क़ुर्बानी करने वालों से सुलूक फ़रमाता है और मख़लसीन भी किस जज़्बे के साथ अपनी क़ुर्बानियां पेश करते हैं।

नौ मुबाइन, जिनको अहमदी हुए, इस्लाम स्वीकार किए, थोड़ा अरसा हुआ है उनमें भी माली क़ुर्बानी की तरफ़ ख़ुद बख़ुद तवज्जा पैदा हो रही है और इसलिए कि उनको इस माली क़ुर्बानी की रूह की समझ आ गई है।

लाइबेरिया से लोकल मुअल्लिम मुहम्मद जॉनसन हैं। यह पहले ईसाई थे, मुस्लमान हुए, मुअल्लिम बने। कहते हैं हमारी कोनटी में कुछ माह पूर्व एक गांव में तब्लीग़ी कोशिश के नतीजा में जमाअत का पौधा लगा और इस गांव के लोगों ने इमाम समेत जमाअत में शमूलियत इख़्तेयार कर ली। यह एक छोटा सा गांव है और वहां कोई बाक़ायदा सड़क भी नहीं जाती। बारिशों की वजह से वहां पहुंचना भी मुश्किल था। तहरीक-ए-जदीद के चंदे की वसूली के सिलसिला में कहते हैं कि इस गांव को हम ने ख़ुद जान-बूझ कर नज़रअंदाज कर दिया कि अगले वर्ष इनको तहरीक करेंगे और तहरीक-ए-जदीद में शामिल करेंगे। एक तो यह बिल्कुल नए अहमदी थे, रास्ता भी दुशवार था, गांव भी छोटा सा था। कहते हैं एक दिन गांव के अबूकाई (bokai) साहिब अचानक टब-मैनबर्ग मिशन हाऊस पहुंच गए और आते ही कुछ पैसे दिए कि जमाअत के इक्कीस लोगों का तहरीक-ए-जदीद का चंदा है। जब उनसे पूछा कि आपको कैसे पता चला? आपको तो तहरीक नहीं की गई थी तो उन्होंने बताया कि मैं रेडियो पर जमाअत के प्रोग्राम बाक़ायदा सुनता हूँ और पिछले हफ़्ता जब आपने रेडियो प्रोग्राम में तहरीक-ए-जदीद का परिचय करवाया और उसकी एहमीयत वर्णन की तो मैंने यह बात अपनी जमाअत के सामने रखी। इस पर लोगों ने यह चंदा दिया तो इस तरह ख़ुद ब ख़ुद अल्लाह तआला उनके दिलों में

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

डालता है, एहसास पैदा कर रहा है, क़ुर्बानी की रूह पैदा कर रहा है।

गेम्बया के अमीर साहिब ने लिखा है कि एक गांव में तहरीक-ए-जदीद के हवाले से तहरीक की गई। समस्त लोग नौ-मुबाइन हैं। एक सत्तावन वर्ष बूढ़ी औरत सिस्टर खातून ने दो डलासी (dalasi) निकाल कर चंदा में अदा कर दिया। यह वहां की करंसी है। ख़ातून कहने लगीं कि यह वाहिद रास्ता है जिससे कोई भी सच्चे इस्लाम अहमदियत के पैग़ाम को फैला सकता है जैसा कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में हुआ करता था। उसने कहा कि यह आख़िरी रक़म थी जो उसने अपने ख़ानदान के लिए खाना ख़रीदने के लिए रखी हुई थी। यह नहीं कि वो अमीर औरत थी। दो सौ डलासी रक़म दी और कहा कि इसलिए दे रही हूँ कि इस्लाम की तब्लीग़ करने के लिए इस रक़म की ज़रूरत है। मैं अपनी भूख क़ुर्बान करती हूँ और यह रक़म दे रही हूँ। कहते हैं अभी ये बातें हो रही थीं कि उनका बेटा जो स्विटज़रलैंड में है, उसका फ़ोन आया और उसने बताया कि उसने बारह हज़ार दो सौ डलासी भेजे हैं। इस पर इस ख़ातून ने मजमा में रोते हुए ऐलान किया कि अल्लाह तआला ने किस तरह हम पर फ़ज़ल किया है। कहने लगी कि अब में और ज़्यादा चंदा अदा करूँगी। वहां मौजूद लोग भी हैरान थे। छः माह से ज़्यादा अरसा हो गया था बेटा सम्पर्क नहीं कर रहा था, माँ को पूछ नहीं रहा था। माँ का माली लिहाज़ से बुरा हाल था लेकिन इसी अवसर पर ऐसा हुआ। अल्लाह तआला ने ऐसे सामान पैदा फ़रमाए कि फ़ोन आया और साथ ही रक़म आई। इस पर वाक़ई लोगों पर-असर हुआ कि अहमदियत हक़ीक़ी इस्लाम है और सबने यह अह्द किया कि हम मरते दम तक अहमदी रहेंगे।

तनज़ानिया के उत्तर पश्चिम में गेटा (geita) रीजन की एक जमाअत है। वहां के मुअल्लिम ने लिखा कि अब्दुल्लाह साहिब एक ख़ादिम हैं। चंद माह क़बल उन्होंने बैअत की थी। एक दिन उन्होंने ख़ुतबा जुमा में चंदा तहरीक-ए-जदीद के बारे में सुना। उन्हें इलम हुआ कि यह चंदा की वसूली का आख़िरी महीना है और हर अहमदी को जो कुछ भी तौफ़ीक़ रखता है उसको बरकत की ख़ातिर इस में शामिल होना चाहिए। अब्दुल्लाह साहिब के पास कोई रक़म नहीं थी। उन्होंने वादा किया कि अगले दिन शाम तक वह ज़रूर कुछ न कुछ रक़म चंदा तहरीक-ए-जदीद में अदा कर देंगे। अगले दिन वह काम की तलाश में निकले। एक शख़्स को ज़मीन की काशत करने के लिए आदमी की ज़रूरत थी और अब्दुल्लाह साहिब को उन्होंने काम दे दिया और उन्होंने सारा दिन बड़ी मेहनत से जो भी काम ज़िम्मा लगाया था वह शायद आम हालात में दो दिन में मुकम्मल करते लेकिन उन्होंने शाम तक मुकम्मल कर लिया और जो रक़म मिली वह लेकर चंदा तहरीक-ए-जदीद अदा करने के लिए पहुंच गए। यह वाक़िया सुना कर ख़ुद ही कहने लगे कि अल्लाह तआला ने मेरी नियत में बरकत रखी और महिज़ अपने फ़ज़ल से माली क़ुर्बानी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। यह एहसास भी साथ पैदा हो जाता है।

आस्ट्रेलिया के क़रीब सोलोमन आईलैंड एक जज़ीरा है। आस्ट्रेलिया के मुरब्बी साहिब लिखते हैं कि सोलोमन आईलैंड के दौरे के दौरान तर्बीयती और तब्लीग़ी, इंतेज़ामी प्रोग्रामों के इलावा तहरीक-ए-जदीद के इख़तेताम की निसबत से अहबाब को चंदे की तहरीक की गई, तवज्जा दिलाई गई तो वहां एक महिला हैं। उनके पति ग़ैर मुस्लिम हैं। दोनों पोल्ट्रीफार्म चलाते हैं। सैक्रेटरी तहरीक-ए-जदीद जब उनके घर गए चंदा की याददहानी के लिए गए तो घर पर नहीं थीं। उनके बच्चों ने जो थोड़ी बहुत रक़म उनके पास थी वह अदा कर दी। ख़ातून वापस जब घर आएं तो बच्चों ने बताया कि इस तरह सैक्रेटरी तहरीक-ए-जदीद आए थे। वह तुरंत सैक्रेटरी के घर गईं और एक हज़ार डालर चंदा तहरीक-ए-जदीद में अदा कर दिया जिस पर सैक्रेटरी साहिब ने उन्हें कहा कि मैंने तो सब दोस्तों से चंदा वसूल कर लिया। लिस्ट तैयार कर के दे आया हूँ तो अगले साल मैं यह चंदा डाल लेते हैं। उन्होंने कहा नहीं! मैंने अपने ख़ुदा से यह वादा किया था कि इस साल इतना देना है तो यह इसी साल में शुमार करें। इसलिए उनके कहने पर दुबारा नई लिस्ट तैयार की गई और रातों रात उसकी सूचना मर्कज़ को दी।

फिर अल्लाह तआला किस तरह कई गुना बढ़ा कर देता है इस के भी नज़्ज़ारे नज़र आते हैं।

गिनी कनाकरी के मुबल्लिग़ लिखते हैं। यहां एक जगह काफ़ीलिया (kafilya) है। मिशनरी ने वहां ख़ुतबा में तहरीक-ए-जदीद के हवाले से तवज्जा दिलाई। फिर इन्फेरादी तौर पर घरों का भी दौरा किया। एक नौजवान मुहम्मद सुलह (sylla) साहिब मिले और उन्हें चंदा की अदायगी की तरफ़ तवज्जा दिलाई जिस पर उन्होंने उसी वक़्त अपनी जेब से दस हज़ार गिनी फ्राँक (guinean franc) निकाल कर तहरीक-ए-जदीद की मद में अदा कर दिए और साथ ही कहा कि यह मेरे पास मौजूद थी जिस से मैंने दोपहर और रात का खाना ख़रीदना था लेकिन मैं आज अल्लाह और इस की रज़ा की ख़ातिर भूखा रह लूँगा और इस वाक़िया के चार दिन बाद इस नौजवान का मिशनरी को फ़ोन आया कि अल्लाह तआला ने मेरी क़ुर्बानी क़बूल कर ली है। कहते हैं मैंने एक mining कंपनी में ड्राईवर की जॉब के लिए इंटरव्यू दिया हुआ था और यहां अल्लाह के फ़ज़ल से मुझे साढ़े पाँच मिलियन गिनी फ्राँक माहाना तनख़्वाह पर पाँच साल का contract मिल गया है। इस तरह अल्लाह तआला ने कई हज़ार गुना बढ़ा कर मुझे अता फ़रमाया। साल का चंदा तो उन्होंने दस हज़ार दिया था लेकिन इज़ाफ़ा जो साल में हुआ वह सात सौ गुना से बढ़ा कर छः हज़ार छः सौ गुना है। अल्लाह तआला कहता है मैं चाहता हूँ तू इस से बढ़ा कर भी दे देता हूँ तो यहां इस से भी बढ़ा कर देने का नज़ारा है।

फिर नाईजेरिया की सदर लजना लिखती हैं। अल्लाह के फ़ज़ल से लजनाइमा इल्लाह नाईजेरिया की पहली 3 रोज़ा नैशनल तर्बीयती क्लास के इनइक़ाद का अवसर मिला। बहुत सारी महिलाओं ने शिरकत की। इस में उमूमी तौर पर तहरीक-ए-जदीद के हवाले से भी तवज्जा दिलाई गई कि साल ख़त्म होने में कुछ अरसा रहता है। वादा अदा करने की कोशिश करें जितनी जल्दी कर सकती हैं। लेकिन कहती हैं उसी वक़्त लजना ने चंदा पेश करना शुरू कर दिया। उनको कहा भी कि अभी तो सिर्फ तहरीक थी, वक़्त है अभी। उन्हों ने कहा नहीं हम अभी देंगी। उनकी देखा देखी दूसरी ख़वातीन भी आगे आईं। उन्होंने माली क़ुर्बानी पेश की और एक बड़ी रक़म जमा हो गई।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दुनिया में तक़रीबन हर जगह लजना अपनी संख्या के लिहाज़ से अपना हिस्सा चंदों में अदा करती है और किसी से पीछे नहीं है। कुछ मुल्कों में तो बाअज़ दफ़ा ख़ुद्दाम और अंसार को तवज्जा दिलानी पड़ती है कि लजना क़ुर्बानी में बढ़ गई है। आप लोग भी इस के मुताबिक़ अदा करें।

सेंट पीटरज़ बर्ग रशिया के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि अरसान बैक साहिब का ताल्लुक़ रशिया की एक रियासत से है। पिछले साल मैं ने तहरीक-ए-जदीद के नए साल का जो ऐलान किया था तो अरसान साहिब ने कहा कि वह तहरीक-ए-जदीद में एक रूबल (rouble) की क़ुर्बानी पेश करते हैं और उन्होंने पिछले साल की थी। अब उन्होंने कहा इस साल मैं दस हज़ार रूबल का वादा करता हूँ और फिर अपने बिज़नस के बारे में कहा कि वह शुरू करने वाले हैं। तो बहरहाल उन्होंने जुलाई में अपना दस हज़ार रूबल का वादा मुकम्मल कर दिया। रशिया के हालात भी यूक्रेन जंग की वजह से तंग हैं और रूबल की क़ीमत भी काफ़ी गिर गई है लेकिन उन्होंने यह पूरा किया। तो यह कुल दस हज़ार रूबल जो एक सौ अठहत्तर यूरो बनते हैं लेकिन वहां के हालात के मुताबिक़ यह उनके लिए बहुत बड़ी रक़म थी। उन्होंने यह अदा करने के बाद कहा कि मैं पाँच सौ रूबल चंदा इसके इलावा देता रहूँगा और रोज़ाना पाँच सौ रूबल अदा करते रहे कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मेरे बिज़नस में ऐसी बरकत पड़ी है कि बावजूद हालात ख़राब होने के मुझे बहुत आमद हो रही है। इसके बाद उन्होंने उसे एक हज़ार रूबल कर दिया और यह भी रोज़ाना अदा कर रहे हैं।

कैमरोन का शुमाली शहर है मर्वा (maroua) वहां के मुअल्लिम लिखते हैं। यह भी ग़रीबों के ईमान में पुख़्तगी और चंदा की बरकात का एक वाक़िया है। अब्दुल्लाह साहिब नौ मुबाइन हैं, बिल्कुल ग़रीब आदमी हैं। कहते हैं पिछले साल तहरीक-ए-जदीद के लिए आधी बाल्टी अर्थात पाँच किलो मकई का बतौर चंदा उन्होंने तहरीक-ए-जदीद में दिया और कहते हैं इस की वजह से मुझे अल्लाह तआला ने पाँच बोरियां अता फरमाई। तीन सौ पच्चास किलो। सत्तर गुना इज़ाफ़ा हुआ। इस साल कहते हैं बड़ा परेशान था। खाद महंगी हो गई थी। क़ीमतें बढ़ गईं। मैं ख़रीद नहीं सकता था। मुझे फ़िक्र हुई कि यह न हो कि फ़सल अच्छी न हो। बहरहाल कहते हैं मैं ने थोड़ी बहुत मेहनत की जो मेहनत कर सकता था। अल्लाह तआला ने ऐसी बरकत डाली कि इस साल उनकी इस से दोगुनी फ़सल निकली और तहरीक-ए-जदीद में भी

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

उन्होंने सत्तर किलो की बोरी चंदा तहरीक-ए-जदीद अदा किया। कहते हैं कि मैं अपनी फ़ैमिली को भी बताता हूँ कि तहरीक-ए-जदीद के चंदे की बरकत से ख़ुदा तआला मेरी मेहनत और फ़सल में बरकत डालता है।

गेम्बया के अमीर साहिब लिखते हैं। छोटे-छोटे वाक़ियात हैं लेकिन ग़रीब अहमदी के लिए बहुत अहम हैं। एक गांव से ताल्लुक़ रखने वाले एक दोस्त पाथे सीसे जिन्होंने 2014 ई. में बैअत की थी उन्होंने बताया कि मैं जमाअत में शामिल होने से पहले बेरोज़गार था। कई मर्तबा नौकरी हासिल करने की कोशिश की लेकिन बेसूद रहा। कहते हैं जब से जमाअत में शामिल हुआ हूँ चंदा जात और दीगर जमाअती कामों वग़ैरा में, तब्लीग़ इत्यादि में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेता हूँ। इसलिए अब वह दो जगह नौकरी कर रहे हैं। कहाँ बेरोज़गारी थी और रहना भी मुश्किल था, घर नहीं था। अब उन्होंने पुख़्ता घर भी बना लिया है। लोग कहते हैं कि जमाअत ने उनकी मदद की। वह उत्तर में यह कहते हैं कि यह जमाअत ने मदद नहीं की अल्लाह तआला ने चंदे की बरकत से मेरी मदद की है।

इंडोनेशिया के अमीर साहिब लिखते हैं कि एक अहमदी हैं। उनकी फ़ैक्ट्री है। हालात ठीक नहीं चल रहे थे। तहरीक-ए-जदीद के बारे में जब पिछले साल बाअज़ वाक़ियात का वर्णन किया और नए साल का मैं ने ऐलान किया तो बड़ा अच्छा असर उन पर हुआ, बड़ा गहरा असर हुआ। उन्होंने फ़ौरन तहरीक-ए-जदीद के लिए पिछले साल की निसबत दोगुना वादा लिखवा दिया और फ़ौरन उस वादे को पूरा भी कर दिया। इस के एक हफ़्ता बाद ही अल्लाह तआला ने उनको नवाज़ा और उनकी सेल में इज़ाफ़ा होना शुरू हुआ। इस तरह एक कंपनी ने जिनके साथ पहले बिज़नस बंद था वह वापिस आगई और बड़ी ख़रीदारी की पेशकश की। इस साल कहते हैं कि मेरी कंपनी की आमदनी पिछले सालों से कई गुना बढ़ गई।

जर्मनी से मुबल्लिग़ फ़र्हाद साहिब लिखते हैं कि वेज़ बादिन (wiesbaden) की एक ख़ातून को नौकरी से फ़ारिग़ कर दिया गया। आमद भी रुक गई। पति को बुलाना था, स्पांसर नहीं कर सकती थीं। परेशानी का इज़हार अपने भाई से किया तो उसने कहा कि अच्छा अब यही ईलाज है कि दुआ करो और चंदा दो। माली क़ुर्बानी करो। उन्होंने अपना ज़ेवर बेच के चंदा अदा कर दिया। चार दिन के बाद काम वालों का पैग़ाम आ गया कि मुस्तक़िल काम आप को दिया जाता है और तनख़्वाह भी दो हज़ार यूरो होगी जिससे वह अपने पति को स्पांसर भी कर सकती थीं।

इंडिया से वकीलुल माल साहिब कहते हैं कि यहां एक साहिब हैं, जो तहरीक-ए-जदीद की माली क़ुर्बानी में बड़े पेश-पेश हैं। उन्हें बजट में इज़ाफ़ा की तहरीक की तो कहने लगे कितना इज़ाफ़ा करूँ? उनसे कहा कि अपने वसायल के मुताबिक़ जो आप कर सकते हैं कर दें लेकिन उनका मुबल्लिग़ को या मर्कज़ी नुमाइंदे को इसरार था कि आप बताएं तो नुमाइंदे ने कह दिया कि अच्छा दस लाख रुपय का इज़ाफ़ा कर दें। वह पहले पाँच लाख रुपय दे चुके थे। इसलिए उन्होंने इज़ाफ़ा कर दिया और अदायगी भी कर दी। कहते हैं कि मेरा एक मकान था जिसकी रजिस्ट्री नहीं हो रही थी और बड़ा भारी नुक़्सान पहुंचने का ख़्याल था लेकिन इज़ाफ़ा करने के चंद दिन बाद ही फसा हुआ यह काम भी हो गया और अल्लाह तआला ने नुक़्सान पूरा कर दिया। तो अल्लाह तआला न अमीरों से उधार रखता है न ग़रीबों से।

हर एक को उसके मुताबिक़ नवाज़ता है। इंडिया से ही वकीलुल माल साहिब लिखते हैं कि कश्मीर के एक डाक्टर प्रोफ़ैसर साहिब हैं। वह कश्मीर यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ैसर हैं। वादाजात की अदायगी कर दी थी इसके बाद उन्होंने बताया कि मुझे तरक़्क़ी दे के मैं professor-cum- chief scientist बना दिया गया है और ग़ैरमामूली इज़ाफ़ा मेरी तनख़्वाह में भी हो गया है। इस पर उन्होंने अपने तहरीक-ए-जदीद के चंदे में भी इज़ाफ़ा कर दिया।

मारीशस की महिला कहती हैं पिछले साल रिश्तेदारों के तहरीक-ए-जदीद के हवाले से कुछ वाक़ियात सुनने के बाद मेरे पति ने मुझे कहा कि ऐसी रक़म वादा करना चाहिए जिसकी अदायगी क़दरे मुश्किल हो। इसलिए पचहत्तर 75 हज़ार रुपया जो मारीशस रुपया है इसका वादा लिखवा दिया। कहती हैं कि उस वक़्त मेरे शौहर एक मैडीकल कंपनी में काम करते थे। पिछले तीन सालों में तनख़्वाह में मामूली इज़ाफ़ा हुआ था लेकिन जब उन्होंने वादा लिखवाया तो एक प्राईवेट हस्पताल में जॉब ऑफ़र हो गई। इन्ही दिनों में शौहर ने अपनी माता को एक हज़ार तोहफ़ा भी दिया था। तो मुलाज़मत के लिए इंटरव्यू देना था। शौहर ने बताया कि एहसास हो रहा था कि यह इंटरव्यू जहां है वहां मुझे जॉब भी मिल जाएगा और रक़म जो मुझे तनख़्वाह में मिलेगी वह उस के क़रीब क़रीब होगी जो मैंने क़ुर्बानी की है। इसलिए इंटरव्यू हुआ, उनको रख लिया और छहतर 76 हज़ार रुपय तनख़्वाह की पेशकश उन्हें हुई। वादा पचहत्तर 75 हज़ार का था। कहते हैं एक हज़ार जो मेरी वालिदा का था वह भी अल्लाह तआला ने मुझे लौटा दिया।

बंगलादेश के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि यहां एक साहिब को कोरोना वबा के दौरान काफ़ी नुक़्सान हुआ। चंदों का अच्छा-ख़ासा बक़ाया हो गया। तहरीक-ए-जदीद इत्यादि के चंदे के बारे में याददेहानी करवाई गई तो अपनी पत्नी की जमा पूँजी में से साढ़े ग्यारह हज़ार टिका (taka) अदा कर दिया लेकिन अभी भी आधा बक़ाया था। बहरहाल कहते हैं इस माह के आख़िर में पत्नी ने सूचना भेजी कि आकर बक़ाया चंदा ले जाएं। जब हमारी टीम वहां पहुंची तो वादा शूदा चंदों से तीन गुना ज़्यादा चंदा अदा किया और लाज़िमी चंदों का बक़ाया भी अदा कर दिया और साथ ही यह ख़ुशख़बरी भी सुनाई कि एक देरीना ज़रूरत ख़ुदा ने हाल ही में पूरी कर दी है। बड़ी देर से वह मकान के लिए एक क़ता ज़मीन ढूंढ रहे थे। जब से उन्होंने चंदे अदा करने शुरू किए हैं ख़ुदा ने एजाज़ी रंग में मकान बनाने के लिए एक प्लाट ख़रीदने की तौफ़ीक़ दे दी। आमदन भी बढ़ गई, चंदे भी अदा कर दिए और अल्लाह तआला ने जायदाद बनाने की तौफ़ीक़ भी दे दी।

बुर्कीना फासो से एक दोस्त हैं। टीचर हैं। कहते हैं गाड़ी ख़रीदने की तौफ़ीक़ मिली तो उनके बाक़ी टीचरों ने कहा कि टीचर तो हम भी हैं, हम तो यह ख़रीद नहीं सकते। निसंदेह जमाअत ने मदद की होगी। कहते हैं मैंने कहा जमाअत ने मदद नहीं की। यह अल्लाह तआला ने मेरे माल में चंदों की वजह से बरकत डाल दी। कहते हैं तालिब-ए-इलमी के ज़माना से ही मुझे चंदा देने की आदत है और अल्लाह तआला हमेशा मुझे नवाज़ता रहता है।

जर्मनी की जमाअत ब्रूक (osnabrück) के एक साहिब हैं। वह लिखते हैं तहरीक-ए-जदीद के हवाले से एक इजलास रखा गया। कहते हैं पाँच सौ यूरो में इज़ाफ़ी अदा करने के लिए लाया तो उनको कहा गया कि रसीद बुक ख़त्म है। कहते हैं मैं वापस चला गया और अपने लेबर को देना था, जिन से काम करवाते थे उनको अदा कर दिए। तो रात को ख़ाब में उन्होंने मुझे देखा। कहते हैं कि मुझे आप कह रहे हैं। अर्थात उस शख़्स को मैं कह रहा हूँ कि मुझे पाँच हज़ार यूरोज़ चाहिऐं। कहते हैं मैं समझ गया इस से मुराद तहरीक-ए-जदीद का चंदा है। बेगम को ख़ाब सुनाई उसने कहा कि तहरीक-ए-जदीद में पाँच हज़ार यूरो अदा करेंगे और कहते हैं इस से कुछ ही अरसा बाद कोरोना हेल्प् में मेरे एकाऊंट में बाईस हज़ार से ज़्यादा रक़म आ गई जिसका वहम-ओ-गुमान भी नहीं था।

कैनेडा से एक लजना वर्णन करती हैं माली तंगी का सामना था। बड़ी परेशान थी कि अपना वादा किस तरह पूरा करूँगी। बड़ी फ़िक्र भी थी, दुआ भी कर रही थी। मेरी नीयत बड़ी नेक थी। आसार बज़ाहिर नज़र नहीं आ रहे थे। बहुत दुआएं कीं। फिर क्या हुआ, कहती हैं एक रात मेरी बेटी अपना बर्थ सर्टीफ़िकेट ढूंढ रही थी कि एक पुराना पर्स उसको मिल गया। कहती हैं आठ साल पहले अमरीका गए थे तो मैंने अमरीका जाने से कुछ अरसा पहले वहां ख़र्च के लिए कोई रक़म रखी हुई थी इस में से कुछ बच गई थी वह मैंने वहां डाल के रख दी थी और मुझे भूल गया था और जो रक़म निकाली तो वह ऐन इतनी रक़म थी जितना चंदा अदा करना था। तो अल्लाह तआला इस तरह भी मदद फ़रमाता है।

गिनी कनाकरी के सदर साहिब लिखते हैं एक ग़रीब अहमदी महिला हैं। मामूली चीज़ें फ़रोख़्त करके अपना गुज़र बसर करती हैं। अशरा तहरीक-ए-जदीद के दौरान जब उनके घर पहुंचे और उन ख़ातून को भी तहरीक-ए-जदीद के चंदा की अदायगी की तरफ़ तवज्जा दिलाई तो ख़ुद कहने लगीं कि अब इस छोटे से ज़रीया आमदनी की वजह से बहुत परेशान हूँ। कारोबार मैं ने उधार लेकर शुरू किया था। आमदन न होने के बराबर है। उधार भी नहीं अदा कर सकती। बहरहाल समझाया गया और दुआ के लिए भी कहा गया तो इस औरत ने बीस हज़ार फ्राँक ग़नी जो कुल रक़म उनके पास मौजूद थी चंदा में दे दी। वह ग़रीब ख़ातून जो कि हालात से लड़ रही थी उसके लिए यह बहुत बड़ी रक़म थी। कुछ दिनों बाद जब हमारे मिशनरी दुबारा किसी काम के सिलसिला में इस महिला से मिलने गए। जब इस से मिले तो इस ख़ातून ने जज़बात से भरी आवाज़ में ख़ुशी से कहा कि अल्लाह तआला ने मेरे सारे मसायल हल कर दिए हैं। मेरा मामूली कारोबार बहुत अच्छा चल पड़ा है। मेरा क़र्ज़ा भी उतर गया है और यह सब इस माली क़ुर्बानी की वजह है।

तातारस्तान रशिया के एक दोस्त अबराहेमोफ़ (farid ibrahimov) हैं। कहते हैं पिछले साल मौसिम-ए-गर्मा में मेरे फ़ोन के साथ कुछ अजीब मुआमला हुआ। कहते हैं मेरे बैंक के ऑनलाइन एकाऊंट में अपने मुसाफ़िरों से रक़म वसूल करने के बाद माली अतायत के बारे में जो ख़लीफ़ा वक़्त का ख़ुतबा है वह ख़ुद बख़ुद मेरे स्मार्टफोन पर लग गया। कहते हैं ऐसा एक-बार नहीं हुआ बल्कि जब भी कोई बड़ी रक़म मेरे एकाऊंट में मुंतक़िल होती तो ऐसा कुछ न कुछ वाक़िया हो जाता। मैं समझ

गया कि अल्लाह तआला अपनी हस्ती का सबूत देते हुए मुझे याददेहानी करवा रहा है। यह मेरे लिए एक बहुत बड़े एज़ाज़ की बात है कि मैं हज़रत मसीह मौऊद आकी जमाअत में शामिल हो कर माली क़ुर्बानी की तौफ़ीक़ पा रहा हूँ। तो ऐसा होता है कि ख़ुद बख़ुद ख़ुतबा लग गया या कोई पैग़ाम आ जाता है उनके फ़ोन पर जिससे उनको चंदे की तहरीक पैदा होती है।

फिर तनज़ानिया की एक मुख़लिस महिला हैं, कहती हैं कि जलसा से वापसी पर उनको ख़्याल आया कि चंदा तहरीक-ए-जदीद का बक़ाया है। कोई रस्ता नज़र नहीं आ रहा था। एक शख़्स ने उनसे क़र्ज़ लिया हुआ था। उम्मीद थी कि वह वापिस कर देगा तो चंदा अदा कर देंगी लेकिन वह जवाब नहीं दे रहा था। फ़ोन भी नहीं उठाता था। बीमार थीं, दवाई इत्यादि के अख़राजात भी रोज़ बरोज़ बढ़ते जा रहे थे। बड़ी परेशान थीं। बच्चों की स्कूल फ़ीस की भी फ़िक्र थी। अपने बच्चों से कहा कि दुआ करो और कहती हैं कि इसी दौरान में अज़ान की आवाज़ आई तो बच्चे ने कहा कि नमाज़ पर चलते हैं और ख़ुदा से मांगते हैं। अल्लाह तआला इस तरह बच्चों के ईमान भी मज़बूत करता है कि हमारे पास पैसे नहीं हैं तो हो सकता है कि अल्लाह तआला हमारी दुआ सुन ले और इस के दिल में डाले और वह शख़्स पैसे वापस कर दे। इसलिए माँ बेटे ने वुज़ू कर के नमाज़ में अल्लाह तआला के हुज़ूर इल्तिजा की। अल्लाह तआला का करना ऐसा हुआ कि नमाज़ ख़त्म करने से पहले ही फ़ोन की घंटी बजना शुरू हो गई। यह उस शख़्स का फ़ोन था जिसने क़र्ज़ लिया हुआ था। इस शख़्स ने कहा कि मैं दरवाज़े के बाहर खड़ा हूँ और तुम्हारे पैसे वापस करने आया हूँ। इस शख़्स ने बताया कि मैं बस स्टॉप पर खड़ा वैगन का इंतेज़ार कर रहा था कि अज़ान की आवाज़ सुनाई दी और साथ ही मुझे ऐसे लगा जैसे कोई आवाज़ मुझे कह रही है कि पहले क़र्ज़ की रक़म वापस कर दो। इसलिए में पैसे वापस करने आ गया। इस औरत और बच्चे ने यह सारा वाक़िया सुना तो दिल अल्लाह तआला की हमद से भर गया। उन्होंने कहा कि अल्लाह तआला का शुक्र है। बच्चे ने कहा देखा हमने नमाज़ पढ़ी तो हमें पैसे भी मिल गए और फिर उन्होंने अपनी ज़रूरीयात पूरी कीं।

सेंट पीटरज़ बर्ग के एक साहिब इकराम जान साहिब हैं। वह कहते हैं कि मैं हमेशा अपनी माली ख़ुशहाली की दुआ करता हूँ ताकि ज़रूरतमंद लोगों की मदद कर सकूं और खासतौर पर अपने चंदा जात की अदायगी कर सकूं और यह हमेशा अजीब तरीक़ से रौनुमा होता है। कहते हैं पिछली मर्तबा मेरे पास तीन हज़ार रूबलज़ कम थे जबकि चंदा की अदायगी का आख़िरी दिन था। काम के दौरान मेरे पास अचानक दो लोग आए जिनमें से एक ने मुझे हज़ार और दूसरे ने दो हज़ार रूबल दिए और इस से पहले मेरे साथ ऐसा कभी नहीं हुआ क्योंकि काम से तीन सौ से पाँच सौ रूबल मिलते थे। अब मैं अपनी ज़ायद आमदनी अल्लाह तआला की राह में दे देता हूँ।

तो ये चंद वाक़ियात हैं जो मैंने पेश किए कि किस तरह अल्लाह तआला उन लोगों को नवाज़ता है जो माली क़ुर्बानी ख़ालिस हो के करते हैं।

इस के बाद अब तहरीक-ए-जदीद के नए वर्ष का ऐलान भी करता हूँ यह 88 वर्ष 31अक्तूबर को समाप्त हुआ है और 1 नवंबर से 89 वर्ष, 89 वाला साल अब शुरू हुआ है।

इस साल तहरीक-ए-जदीद के माली निज़ाम में 16.4 मिलियन पाऊंडज़ की माली क़ुर्बानी जमाअत ने पेश की। अलहमदो लिल्लाह। दुनिया के तेज़ी से बिगड़ते हुए इक़तेसादी हालात के बावजूद यह वसूली पिछले साल के मुक़ाबले पर अल्लाह तआला के फ़ज़ल से 1.1 मिलियन पाऊंडज़ ज़्यादा है अर्थात ग्यारह लाख पाऊंडज़ ज़्यादा है।

पहले की तरह अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस साल भी जमाअत जर्मनी दुनिया-भर की जमाअतों में प्रथम नंबर पर है।

पाकिस्तान ने भी क़ुर्बानी के लिहाज़ से बहुत क़ुर्बानी की है लेकिन इक़तेसादी हालात वहां ख़राब हैं। पैसे की जो वैल्यू (value) गिरी है इस की वजह से वे नीचे गए हैं। बाक़ी क़ुर्बानी के लिहाज़ से तो वे आगे ही बढ़े हैं। जर्मनी जबकि ऊपर है लेकिन अपनी मुक़ामी करंसी के लिहाज़ से उनमें कमी हुई है और बर्तानिया और अमरीका में जिस तरह इज़ाफ़ा हो रहा है अगर ये इज़ाफ़े में बढ़ते जाएं तो ये ऊपर आ सकते हैं। इसी तरह कैनेडा में भी इज़ाफ़ा हुआ है, आस्ट्रेलिया में भी इज़ाफ़ा हुआ है, भारत में भी इज़ाफ़ा हुआ है, घाना की जमाअत के चंदे में भी इज़ाफ़ा हुआ है।

कारकर्दगी के लिहाज़ से ज़्यादा इज़ाफ़ा जो है इस में दूसरी काबिल-ए-ज़िक्र जमाअतें जो हैं वह हॉलैंड है, फ़्रांस है, स्वीडन है, जॉर्जिया है, नार्वे है। बलजीम, बर्मा, मलेशिया, न्यूज़ीलैंड, बंगला देश, केरीबाती, कज़ाख़स्तान, तातारिसतान, फ़िलपाइन, मिडलईस्ट की जमाअत।

अफ्रीकन जमाअतों में मजमूई वसूली के लिहाज़ से नुमायां जमाअतें घाना है, फिर नंबर दो पर मारीशस है, यह भी अफ़्रीक़ा में है, नाईजेरिया, बुर्कीना फासो ,तनज़ानिया, गेम्बया, लाइबेरिया, योगंडा, सैरालियून और बेनिन।

फीकस अदायगी के एतबार से जमाअतों में पहले नंबर पर अमरीका है, फिर बर्तानिया, फिर आस्ट्रेलिया।

शामिल होने वालों की मजमूई संख्या अल्लाह तआला के फ़ज़ल से पंद्रह लाख चौरानवे हज़ार है।

गुज़शता वर्ष की निसबत इज़ाफ़ा करने वाले काबिल-ए-ज़िक्र अफ्रीकन देशों में जो संख्या में इज़ाफ़ा है उनमें नाईजेरिया, गिनी बसाऊ, कांगो, बराज़ावेल, गिनी कनाकरी, तनज़ानिया, कांगो किंशासा, गेम्बया, कैमरोन, आयोरी कोस्ट, नाईजर, सेनेगाल और बुर्कीना फासो हैं।

दफ़्तर अव्वल के खाते तो अल्लाह के फ़ज़ल से सबके सब जारी हैं ।

जर्मनी की पहली दस जमाअतें जो हैं मार्क (rödermark) रोडगाओ (rodgau) महदी आबाद, नेडा (nidda) कोलोन (köln) फ्लोर्स हाइम (flörsheim) नवयस् (neuss) पुणे बर्ग (pinneberg) ओसना ब्रूक (osnabrück) फ्रेड बर्ग (friedberg)

और लोकल इमारतें जो हैं। वे हैमबर्ग (hamburg) फ्रैंकफ़र्ट (frankfurt) ग्रोस गैराओ (gross-gerau) वेज़ बादिन (wiesbaden) डटसन बाख (dietzenbach) फिर रीडशटड (riedstadt) मोरफ़लडन (mörfelden) फ़्लोरज़ हाइम (flörsheim) डामशटड (darmstadt) और मनहाइम (mannheim) हैं।

पाकिस्तान में उमूमी वसूली के लिहाज़ से अव्वल लाहौर है, फिर रबवः, फिर तीसरे नंबर पर कराची।

ज़िलई सतह पर जो दस ज़िले हैं उनमें स्यालकोट नंबर एक है। फिर इस्लामाबाद है। फिर गुजरांवाला। गुजरात। उमरकोट। हैदराबाद। मीरपुर ख़ास। सरगोदहा। कोइटा। लोधरां।

उमरकोट और मीरपुर ख़ास वाले इलाक़े ऐसे हैं जहां पिछले दिनों बारिशों की वजह से सेलाब भी आए। इन इलाक़ों में भी अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ये बहुत बड़ी क़ुर्बानी है जो लोगों ने दी है।

वसूली के एतबार से ज़्यादा क़ुर्बानी करने वाली पाकिस्तान की शहरी जमाअतें ये हैं। इमारत टाउन शिप लाहौर, इमारत दारुल ज़िकर लाहौर, इमारत मॉडल टाउन लाहौर, इमारत मुग़लपूरा लाहौर, इमारत अल्लामा इक़बाल टाउन लाहौर, इमारत बैतुल फ़ज़ल फैसलाबाद, फिर इमारत अज़ीज़ आबाद कराची, फिर इमारत दिल्ली गेट लाहौर, फिर इमारत क्रीम नगर फैसलाबाद, फिर आख़िरी नंबर पर दसवें नंबर पर इमारत सदर कराची।

बर्तानिया के पहले पाँच रीजनज़ जो हैं उनमें नंबर एक पर बैतुल फ़तूह, दूसरे इस्लामाबाद, फिर मस्जिद फ़ज़ल, मिडलैंडज़ (midlands) फिर बैतुल अहसान।

और मजमूई वसूली के लिहाज़ से बर्तानिया की पहली दस बड़ी जमाअतें। पहले नंबर पर फ़ारनहम (farnham) फिर साउथ चीम (south cheam) फिर इस्लामाबाद, फिर वोस्टर पार्क (worcester park) फिर वॉलसॉल (walsall) जलंघम (gillingham) मस्जिद फ़ज़ल, आलडर साउथ (aldershot south) और पटनी (putney)

मजमूई वसूली के लिहाज़ से जो छोटी जमाअतें हैं वह सपन वैली, कैथली, नॉर्थ वेल्ज़, नॉर्थ हैंपटन, सवानज़ी हैं।

मजमूई वसूली के लिहाज़ से अमरीका की जमाअतें। नंबर एक पर मेरीलैंड (maryland) फिर लासएंजलेस (los angeles) फिर नॉर्थ वर्जीनिया, फिर डेट्रॉइट (detroit) सेलेकोन वैली (silicon valley) शिकागो (chicago) सेइटल (seattle) अवश् कोष (oshkosh) फिर साउथ वर्जीनिया (south virginia) अटलांटा (atlanta) जॉर्जिया (georgia) नॉर्थ जर्सी, यार्क (york)

मजमूई वसूली के लिहाज़ से कैनेडा की लोकल इमारात। वान (vaughan) नंबर एक पर, फिर पीस विलेज (peace village) फिर कैलगरी (calgary) वेनकोवर (vancouver) टोरांटो (toronto)

क़ुर्बानी के लिहाज़ से इंडिया की पहली दस जमाअतें हैं नंबर एक पर कोइम्बटोर (coimbatore) तामिलनाडू, फिर क़ादियान, फिर हैदराबाद, करोलाई (karulai) पथाप्रेम, फिर कालीकट, बैंगलौर, मेलापालम, कोलकाता, केरंग।

और क़ुर्बानी के लिहाज़ से दस सूबाजात जो हैं उनमें पहले नंबर पर केराला, फिर तामिल नाडू, फिर कर्नाटक, फिर जम्मू कश्मीर, तिलंगाना, इडेशा, पंजाब, बंगाल,

दिल्ली, महाराष्ट्रा।

आस्ट्रेलिया की पहली दस जमाअतें। कासल हिल (castle hill) मेलबर्न लाँग वार्न (melbourne lang warrin) मेलबर्न बेरोक (melbourne berwick) मारसिडन पार्क (marsden park) फिर पेनरथ (penrith) फिर प्रथ, पैरा माटा (parramatta) फिर एडीलाइड वैस्ट (adelaide west) इसी टी कैनबरा (act canberra) पुर्ज़ बिन लोगन ईस्ट।

तो ये थी पोज़ीशन। अल्लाह तआला सब माली क़ुर्बानी करने वालों के अम्वाल-ओ-नफ़ूस में बे-इंतिहा बरकत अता फ़रमाए।

यू.के की जमाअत ने एक नई वेबसाइट भी शुरू की है जो यू.के में तारीख़-ए-अहमदियत के बारे में है। तारीख़ की तदवीन का यह काम तो कई सालों से हो रहा था। अब जो वेबसाइट तैयार की गई है इस में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मग़रिब में तकमील इशाअत हिदायत की काविशों पर तहक़ीक़ाती लेख को प्रकाशित किए गए हैं। यू.के की तारीख़ का आग़ाज़ 1913ए में समझा जाता है जब चौधरी फ़तह मुहम्मद साहिब स्याल यहां आए थे जबकि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैग़ाम यू.के और यूरोप के दूसरे देशों में आप के दावा मुज्जदेदियत के साथ ही पहुंच गया था जब हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बग़रज़ अतमामे हुज्जत (समझाने के अंतिम प्रयास को पूर्ण करने हेतु) एक ख़त और अंग्रेज़ी इश्तेहार जिसकी आठ हज़ार कापियां छपवा कर हिंदुस्तान और इंग्लिस्तान में मौजूद मशहूर और मुअज़्ज़िज़ पादरी साहिबान तथा मुख़्तलिफ़ सोसाइटीज़ और मज़ाहिब के लीडरान तक जहां-जहां उस ज़माने में इस पैग़ाम का पहुंचना मुम्किन था भिजवाया। उसकी एक मिसाल यह है कि यू.के में (charles bradlaugh) के नाम से एक पोलीटीशन जो एक दहरिया था उसे आप अलैहिस्सलाम की दावत 1885 ई. में मौसूल हुई थी। इस का वर्णन यहां के एक अख़बार कोरक कॉन्स्टीट्यूशन (cork constitution) ने अपने 8 जून 1885 ई. के शुमारे में किया था। इसी तरह दी थियोसोफिस्ट (thesophist) सोसाइटी के एक बानी हैनरी स्टील आलकॉट (henry steel olcott) को भी यह दावत 1886 ई. में मौसूल हुई थी जिसका वर्णन उसने अपने अख़बार दी थियोसोफिस्ट के सितंबर 1886 ई.के शुमारे में किया था।

इस वेबसाइट पर हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दौर-ए-मुबारक पर एक टाइम लाईन तैयार की गई है जिस पर मग़रिब में पैग़ाम-ए-हक़ पर मबनी हक़ायक़ को वर्णन किया गया है। तथा पायनेयर (pioneer) मिशनरीज़ के नाम से एक और टाइम लाईन तैयार की गई है जिसमें अव्वलीन मुबल्लग़ीन सिलसिला जिसमें सहाबा हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम शामिल हैं उनका परिचय और यू.के में उनकी ख़िदमात का वर्णन किया गया है। इस तरह हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पादरी पगट (pigott) के हवाले से पेशगोई पर एक मुफ़स्सिल तहक़ीक़ समस्त हवालों के साथ शाय की गई है। इसी तरह तारीख़ पर मबनी मज़ीद तहक़ीक़ी मज़ामीन शाय किए गए हैं जो नौजवान नसल पर इस बात को वाज़िह करेंगे कि उनका और उनके आबा का उन देशों में आने का असल उद्देश्य क्या था। इस वेबसाइट ऐडरैस history.ahmadiyya.uk तो यह भी आज से शुरू होगी। वैसे तो शुरू है लेकिन बाक़ायदा रस्मी उद्घाटन भी आज ये करवाना चाहते हैं। अल्लाह तआला करे कि ये हमारे लोगों के लिए भी, अपनों के लिए भी, ग़ैरों के लिए भी लाभदायक हो।

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

साहिब ने बताया कि मेरी ख़ुशी की उस वक़्त इंतिहा न रही कि जब मैं दफ़्तर में दाख़िल हुआ तो हुज़ूर अनवर को मालूम था कि मेरे पिता कौन हैं। मैं हैरान रह गया क्योंकि ये मेरी ज़िंदगी की पहली मुलाक़ात थी।

* उसमान ज़िया जमाअत St. louis से आए थे। मुलाक़ात के बाद कहने लगे कि मैंने अपनी आँखों से देखा है कि हुज़ूर अनवर के बाबरकत वजूद में जलाल है। मैंने नूर ही देखा है।

* सलमान अहमद साहिब जो जमाअत शिकागो से आए थे कहने लगे कि मेरे पास शब्द नहीं हैं कि मैं कुछ वर्णन कर सकूँ। बस यही कहता हूँ कि अल्लाह तआला का ख़ास फ़ज़ल है कि मैंने मुलाक़ात की सआदत पाई है और मैंने हुज़ूर अनवर से दुआएं हासिल कीं। हुज़ूर अनवर ने हमें बहुत दुआएं दीं।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम आठ बज कर बीस मिनट तक जारी रहा। इसके बाद 8:30 बजे हुज़ूर अनवर ने मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

यक्म अक्तूबर 2022 ई. शनिवार का दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह पाँच बज कर 50 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर ने डाक मुलाहिज़ा फ़रमाई। यहां अमरीका के इस सफ़र के दौरान दुनिया के मुख़्तलिफ़ देशों से रोज़ाना बज़रीया Fax और ई-मेल के ज़रीया ख़ुतूत और रिपोर्टस मौसूल होती हैं। यहां अमरीका के अहबाब की तरफ़ से ख़ुतूत और मुख़्तलिफ़ विभागों की रिपोर्टस भी हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में पेश होती हैं। हुज़ूर अनवर इन ख़ुतूत और रिपोर्टस को मुलाहिज़ा फ़रमाते हैं और हिदायात से नवाज़ते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 1 बजकर 30 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर-ओ-अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

एक सहाफ़ी महिला को इंटरव्यू

प्रोग्राम के मुताबिक़ पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ नुमाइश हाल में तशरीफ़ लाए जहां "lake county newssun" अख़बार की एक सहाफ़ी ख़ातून yadira sanchez olson साहिबा हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू के लिए आई हुई थीं।

इस सहाफ़ी ने पहला सवाल यह किया कि इस दौर में जब प्रत्येक तरफ़ बहुत ज़्यादा ख़ौफ़, जरायम, बे-घर होना और ख़ुराक की कमी और अदम तहफ़्फ़ुज़ है तो आपका क्या पैग़ाम है ताकि ख़ौफ़ कम हो? इसके जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : सिलसिला अहमदिया के संस्थापक ने फ़रमाया है कि मेरे आने का उद्देश्य लोगों को उनके ख़ालिक़ के क़रीब करना है। उनके पैदा करने वाले तक पहुंचाना है और दूसरा यह कि दुनिया के लोगों को समझाना है कि वे आपस में एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करें। अगर आप लोगों को उनके हुक़ूक़ देते हैं तो फिर कोई जुर्म या बे-घर होना या ख़ुराक का अदम तहफ़्फ़ुज़ नहीं होना चाहिए।

सहाफ़ी ने सवाल किया कि आप नौजवानों को अपने ईमान पर क़ायम रहने के लिए क्या पैग़ाम देना चाहते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : नौजवानों

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

को अपने बुज़ुर्गों की दीन और ईमान की बातें सुननी चाहिए और उनसे दीन और ईमान की बारीकियां सीखनी चाहिए। बच्चे के लिए माता पिता से सब कुछ सीखना एक फ़ित्री अमल है। माता पिता से दीन भी सीखना चाहिए।

सहाफ़ी के इस सवाल के जवाब में कि "क्या आपके ख़्याल में समस्त मज़ाहिब और लोगों के लिए अमन के हुसूल का कोई फ़ार्मूला है? क्या समस्त मज़ाहिब मिलकर अमन के लिए काम कर सकते हैं? "हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अगर दुनिया यह समझ ले कि समस्त लोगों को अल्लाह तआला ने ही पैदा किया है और हमारी पैदाइश का उद्देश्य एक दूसरे को मारना या तबाह करना नहीं है और ये कि समस्त मज़ाहिब अल्लाह तआला की तरफ़ से आए हैं तो फिर आप यह भी समझ लेंगी कि समस्त अनबया और समस्त मज़ाहिब के बानी ने भविष्यवाणी की थी कि आख़िरी ज़माना में एक नबी आएगा जो समस्त मज़ाहिब को मुत्तहिद कर देगा। हमारा यक़ीन है कि वह शख़्स जिसके बारे में समस्त मज़ाहिब की बानी ने भविष्यवाणी की है वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भविष्यवाणी की कि मेरे पैरोकार इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम को भूल जाऐंगे फिर उस वक़्त एक मुस्लेह आएगा जो मेरी उम्मत में से होगा और हमारा यक़ीन है कि यह मुस्लेह सिलसिला अहमदिया के संस्थापक हैं।

एक प्रोफ़ैसर की हुज़ूर से मुलाक़ात

इसके बाद डाक्टर craig consodine ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की। वह हीवसटन में rice यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ैसर हैं।

हुज़ूर अनवर ने मौजूदा जंगी हालात का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि यह इन्सानियत की तबाही की तरफ़ जा रहे हैं। बाअज़ मग़रिबी लीडर्ज़ अपने इक़दाम में इस हद तक आगे जा चुके हैं कि पीछे हटने के लिए तैयार नहीं। अब बाअज़ एशियाई लीडर उन्हें नरम करने और तनाज़ा को कम करने की कोशिश कर रहे हैं।

डाक्टर craig ने कहा कि मैंने एक किताब लिखी है जिसमें अहमदिया जमाअत और हुज़ूर के बारे में लिखा है। मेरी किताब का पैग़ाम मुहब्बत है। जबकि में एक ईसाई हूँ लेकिन मुझे अहमदिया जमाअत से लगाओ है और लगाओ की वजह मुहब्बत ही है। आपका पैग़ाम

"मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी नहीं" मेरे लिए एक ख़ास पैग़ाम है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यह वह पैग़ाम है जिसे प्रत्येक भूल रहा है। दुनिया उस पैग़ाम को भूल गई है।

हुज़ूर ने फ़रमाया आप ईसाई हैं और हम मुस्लमान हैं लेकिन हम सब इन्सान तो हैं। कम से कम हमें बतौर इन्सान एक दूसरे का एहतेराम करना चाहिए। अगर हमें एक दूसरे का एहतेराम करने का एहसास हो जाए तो अमन मुहब्बत और हम-आहंगी होगी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : हमने यहां दुनिया के इस हिस्से में लफ़्ज़ आज़ादी को ग़लत समझा है। हम समझते हैं कि आज़ादी का मतलब है कि हम जो चाहें हमें कहने का हक़ है। हम जो चाहें करने में आज़ाद हैं। ज़रूरी नहीं कि हम दूसरे का एहतेराम करें। यही वजह है कि अब हम बुनियादी बातों अमन, रवादारी और हम-आहंगी से हट रहे हैं।

एक डाक्टर की मुलाक़ात

इसके बाद डाक्टर क़तरीना लांटोस् (dr.katrina lantos) ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की। वह lantos foundation for human rights and justice की सदर हैं और यह यूनाईटिड स्टेटस कमीशन इंटरनैशनल रेलेजीस फ़्रीडम की साबिक़ चेयर और नायब सदर रही हैं।

उन्हों ने कहा कि हुज़ूर से मुलाक़ात करके एक ग़ैरमामूली ख़ास तजुर्बा हासिल होता है। हम हुज़ूर की तरफ़ से जो नूर और हिक्मत है अपनी ज़िंदगी में अपने अंदर महसूस करते हैं और हुज़ूर की सोहबत में रह कर यह महसूस होता है कि हमारे दिन और हमारे हफ़्ते बेहतर होते जाते हैं।

डाक्टर कतरीना ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और डोई के मध्य मुबाहला का वर्णन करते हुए कहा मुबाहला की यह कहानी हैरत-अंगेज़ कहानी है कि सिलसिला अहमदिया के संस्थापक ख़ुदा पर तवक्कुल करते हुए मुख़ालिफ़त और ग़लाज़त के मुक़ाबला में कामयाब हुए।

इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया आप ख़ुद भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कामयाबी का निशान हैं कि आप जमाअत की मदद कर रही हैं। आप प्रत्येक जगह हमारा पैग़ाम पहुंचा रही हैं। आप जहां भी जाती हैं दुनिया को बताती हैं कि हमारी जमाअत वह वाहिद जमाअत है जो हक़ीक़ी अर्थों में मुहब्बत की तब्लीग़ करती है और ख़ुद भी इस पर अमल पैरा है।

उन्होंने पाकिस्तान में जमाअत के मुख़ालिफ़ाना हालात पर अफ़सोस का इज़हार किया और कहा कि अब मुआमला ज़ुलम से भी बदतर हो गया है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अब मौलवी कहते हैं कि हमारी औरतों का हमल साक़ित कर दिया जाए। वह मिस्र के फ़िरऔन से भी बदतर हो चुके हैं। जैसा कि फ़िरऔन ने कहा था कि मिस्र में किसी भी नए पैदा होने वाले बच्चे को क़तल कर देना चाहिए।

उन्होंने अर्ज़ किया कि यह हैरत-अंगेज़ बात है कि आपकी जमाअत बुराई का जवाब बुराई से नहीं देती। नफ़रत का जवाब नफ़रत से नहीं देती।

इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया कि हम इसी तर्ज़ पर जवाब तो दे सकते हैं हम ज़्यादा मुनज़्ज़म हैं लेकिन हम ऐसा नहीं करते क्योंकि हक़ीक़ी इस्लामी तालीम यह नहीं है।

चौदह सरकरदा लोगों की इजतेमाई मुलाक़ात

इस प्रोग्राम के मुताबिक़ निम्नलिखित 14 सरकरदा लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ इजतेमाई तौर पर मुलाक़ात की सआदत हासिल की। mr. billy mckinney

मेयर आफ़ ज़ाइन (zion)

joyce mason स्टेट कांग्रेस वूओमन 61st district

raja krishna moorti यू स कांग्रेस मीन 8th district

katrina lantos swett प्रैज़ीडैंट आफ़ lantos फ़ाउंडेशन हियूमन राईट्स ऐंड जस्टिस

chelsea hedquist (lantos foundation)

dr. craig considine phd सीनीयर लेक्चरर rice यूनीवर्सिटी डिपार्टमैंट आफ़ सौशलोजी

sherif john idleburg पुलिस ऐंड फ़ायर कमिशनर lake काओनटी

cheri neal सुपरवाइज़र आफ़ ज़ाइन टाउन शिप

mary Lou hiltibran इमरजेंसी सर्विसिज़ ऐंड disaster एजैंसी

eric reinhart स्टेट अटार्नी lake काओनटी

rabi melinda zalma

manager of programs tanenbaum center for interreligious understanding New york

rabi mare belgrad

founded b´chavana congregation in nearby baffalo grove, illionois

anriane johnson स्टेट सैंटर 30th district

Dr. gabrielle lyon ऐगज़ैक्टिव डायरेक्टर illinois humanities

इस इजतेमाई मुलाक़ात के दौरान एक ख़ातून ने अर्ज़ किया कि मैं 2002 ई. में गाना मैं इक़रा में रही हूँ और मुझे मालूम हुआ है कि हुज़ूर भी गाना में रहे हैं। मैं जानना चाहती हूँ कि गाना में आपका तजुर्बा कैसा रहा है? इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया आप गाना में इस वक़्त रही हैं जब मआशी सूरत-ए-हाल बेहतर हो गई थी। जब मैं गाना में था तो हालात बहुत ही काबिल-ए-रहम थे। मैंने तक़रीबन चार साल शुमाल में गुज़ारे और दूर दराज़ के शुमाली इलाक़े में और फिर चार साल जुनूबी इलाक़े में गुज़ारे 1985 ई. में, मैंने गाना छोड़ दिया था।

हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में एक मेहमान ने सवाल किया कि एक चीज़ जिसने मुझे जमाअत अहमदिया से मुतास्सिर क्या वह दूसरे मज़ाहिब के लोगों के साथ उनका मेल-जोल है। सबसे अहम तरीक़ा क्या है कि हम अपने मतभेदों के बावजूद लोगों से राबिता क़ायम कर सकते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हमारा दावे है कि इस्लाम वाहिद मज़हब है जो समस्त मज़ाहिब को तस्लीम करता है। हम मानते हैं कि मूसा नबी थे ऐसी नबी थे और प्रत्येक मज़हब अपनी असल में सच्चा मज़हब था। हम कहते हैं कि हमें एक दूसरे के साथ हम-आहंगी के साथ रहना चाहिए और एक दूसरे का एहतेराम करना चाहिए। अगर हम इस बुनियादी उसूल को समझ लें तो हम अमन के साथ रह सकते हैं।

इस मुलाक़ात के बाद इन समस्त मेहमानों ने हुज़ूर अनवर के साथ ग्रुप फ़ोटो बनवाने की सआदत पाई।

एक कांग्रेस मैन की मुलाक़ात

इसके बाद यू एस कांग्रेस मैन raja krishna moorti साहिब ने

हुज़ूर के साथ मुलाक़ात की सआदत पाई। हुज़ूर अनवर के इस्तफ़सार पर मौसूफ़ ने बताया कि इंडिया से इस का ताल्लुक़ से साउथ इंडिया के इलाक़ा चेन्नई (chenai) से है और बहुत छोटी उम्र में वालदैन के साथ अमरीका आ गए थे।

हुज़ूर अनवरने फ़रमाया कि हुज़ूर ने भी चेन्नई का विज़ट किया हुआ है। उनके के एक सवाल पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मैं यहां इस इलाक़ा में दूसरी मर्तबा आया हूँ पहले 2012 ई. में आया था।

कांग्रेस मैन राजा कृष्णा साहिब ने अर्ज़ की कि अमरीका में आपकी कम्यूनिटी बहुत अच्छी है। आप यहां बार-बार आते रहें। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि सारी दुनिया में हमारी कम्यूनिटी है प्रत्येक जगह के जमाअत के लोग मेरा इंतेज़ार करते हैं।

यू. के में जमाअत के मर्कज़ इस्लामाबाद टलफ़ोरड का भी वर्णन हुआ। हुज़ूर ने फ़रमाया कि यहां हमारे मर्कज़ी सैंटर आफ़ीसज़ हैं।

कांग्रेस मैन की हुज़ूर अनवर के साथ यह मुलाक़ात छः बज कर दस मिनट तक जारी रही। कांग्रेस मैन ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर भी खिचवाई।

(शेष आगे ...)

रिपोर्ट : श्रीमान अब्दुल माजिद ताहिर साहिब
(ऐडीशनल वकील अलतबशीर् लंदन, यू.के)
(उद्धारित अख़बार बदर उर्दू 13 20 अक्तूबर 2022)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्फ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमअः और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमअः प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना सम्भव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(सम्पादक)

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

अतः इस क़ुरआन की तालीम से साबित होता है कि अगर किसी मोमिना औरत के बुरे ख़ावंद के समझाने के बावजूद इस्लाह न हो रही हो और औरत को उस से अलैहदगी लेने में कोई मजबूरी दरपेश न हो तो उस मोमिना औरत को दुआ करके ऐसे बुरे ख़ावंद से अलैहदगी ले लेनी चाहिए।

प्रश्न : श्रीमान अमीर साहिब जर्मनी ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहुताला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में कौरोना वायरस की वजह से पैदा होने वाले हालात में नमाज़ बाजमाअत के लिए बाहम नमाज़ियों के दरमयान डेढ़ मीटर का फ़ासिला रखने के बारे में राहनुमाई चाही है? जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 28 अप्रैल 2020 ई. में इस बारे में निमंलिखित हिदायात से नवाज़ा। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इरशाद إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ के तहत इस्लाम के हर हुक्म का आधार नीयत पर है। अतः नमाज़ बाजमाअत के लिए जो नमाज़ियों को आपस में कंधे से कंधा, घुटने से घटना और टख़ने से टख़ना मिला कर खड़े होने और बाहम दरमयान में फ़ासिला न छोड़ने की ताकीद फ़रमाई गई है, इसकी एक हिक्मत यह वर्णन की गई है कि अगर तुम ज़ाहिरन अपने अंदर दूरी पैदा कर लोगे तो शैतान तुम्हारे दरमयान अपनी जगह बना कर तुम्हारे दिलों में मतभेद पैदा कर देगा।

अब जबकि मजबूरी है और हुकूमतें अपने शहरियों की भलाई के लिए ऐसे इक़दामात कर रही हैं तो जब हम हुकूमती क़वानीन के मुताबिक़ इस तरह बाहम फ़ासले के साथ नमाज़ में खड़े होंगे तो चूँकि हमारी नीयत यह नहीं कि हमारे दरमयान फूट पड़े या हमारे दरमयान शैतान मतभेद डाल दे, बल्कि हमारी तो यही नीयत है कि हम मुत्तहिद रहें और मिलकर इस बीमारी का मुक़ाबला करें और अवाम की भलाई के लिए किए जाने वाले इन हुकूमती इक़दामात में उनके साथ तआवुन करें तो इस नीयत के साथ इज़तेरारी हालत में नमाज़ बाजमाअत में नमाज़ियों के दरमयान फ़ासिला रखने में कोई हर्ज नहीं। और इस का इसतंबात सफ़र में बहालत मजबूरी सवारी पर नमाज़ पढ़ने से भी किया जा सकता है, क्योंकि उस वक़्त भी कंधे से कंधा, घुटने से घटना और टख़ने से टख़ना नहीं मिला होता और बाज़-औक़ात नमाज़ियों के दरमयान बाहम फ़ासिला भी होता है। अतः जिस तरह सफ़र में मजबूरी की वजह से करना आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत से साबित है तो इस बीमारी की मजबूरी की हालत में भी नमाज़ियों के दरमयान फ़ासिला रखने में कोई हर्ज नहीं।

अल्लाह तआला रहम फ़रमाए और जल्द इन मुश्किल हालात को सारी दुनिया से दूर कर देता कि उसके इबादतगुज़ार बंदे फिर पूरी शरायत और अहसन अंदाज़ में अपनी इबादतों के नज़राने अपने रब के हुज़ूर पेश करने की तौफ़ीक़ पाए। आमीन।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ एक राह पर ले आएँगे। यह एक किस्म का शिर्क ख़फ़ी है। इस से हमारी जमाअत को परहेज़ करना चाहिए। आपने क़तई तौर पर फ़रमाया और लिख कर भी इरशाद किया कि हमारे मुदर्रिसा में जो उस्ताद मारने की आदत रखता और अपने इस नासज़ा फ़ेअल से बाज़ न आता हो, उसे तुरंत स्थगित कर दो। फ़रमाया : हम तो अपने बच्चों के लिए दुआ करते हैं और सरसरी तौर पर क़वायद और आदाब तालीम की पाबंदी कराते हैं। बस इस से ज़्यादा नहीं और फिर अपना पूरा भरोसा अल्लाह तआला पर रखते हैं। जैसा किसी में सआदत का तुख़्म होगा। वक़्त पर सरसब्ज़ हो जाएगा।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 420 प्रकाशन क़ादियान : 2018)

★ ★ ★

*आम ज़रूरत की वस्तुओं को बेचने के कारोबार में वस्तुओं की क़ीमत क़िस्तों में अदा करने वालों से आम क़ीमत से कुछ ज़्यादा लेना सूद तो नहीं?

* यदि पति पत्नी में से एक फ़रीक़ नशे में हो तो क्या बाहम मुहब्बत के जज़बात क़ायम रह सकते हैं?

* कौरोना वायरस की वजह से पैदा होने वाले हालात में नमाज़ बाजमाअत के लिए बाहम नमाज़ियों के दरमयान डेढ़ मीटर का फ़ासिला रखने के बारे में हुज़ूर अनवर की राहनुमाई

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

(भाग-23)

प्रश्न : इसी virtual मुलाक़ात तिथि 29 नवंबर 2020 ई. में एक और तिफ़्ल ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि कौरोना वायरस के ख़त्म होने के बाद दुनिया फिर से वैसे ही नॉर्मल हो सकती है जैसे पहले थी? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर : यह तो अल्लाह तआला बेहतर जानता है। नॉर्मल हो जाएगी लेकिन कौरोना वायरस के बाद दुनिया के जो आर्थिक हालात, economic हालात हो गए हैं इस का असर दुनिया पर पड़ेगा। और अगर आर्थिक लिहाज़ से कुछ न भी हो, अगर जंग न भी हो तब भी आर्थिक हालात को stable होते होते कई साल लग जाऐंगे। लेकिन उमूमन यही देखा गया है कि जब ऐसे हालात होते हैं तो मआशी हालात बिगड़ते हैं और फिर जंगों की सूरत भी पैदा होती है। और आजकल जो दुनिया की हालत है वह यह है कि जंगों के हालात पैदा हो रहे हैं। और अगर कौरोना वायरस के बाद जंग हो जाती है तो फिर और भी ख़तरनाक हालात हो जाऐंगे। और फिर उसको नॉर्मल होते होते भी कई साल लग जाऐंगे। इसलिए हमें यह दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला दुनिया को अक़्ल दे और जो दुनिया वाले हैं इस अर्से में दुनिया की तरफ़ झुकने और आपस में एक दूसरे के हुक़ूक़ मारने और ग़सब करने की बजाय अक़्ल करें, इनके लीडर अक़्ल करें और अमन और सुकून से रहने की कोशिश करें और आपस में इकट्ठे हो कर, दुनिया को एक रुख के कोशिश करें तो जल्दी दुबारा नॉर्मल हालात पैदा करलींगे। लेकिन अगर उन्होंने यह कोशिश न की तो फिर हालात नॉर्मल नहीं होंगे। फिर हालात नॉर्मल होते हुए कई साल लगेंगे और बड़ी ख़ौफ़नाक सूरत-ए-हाल पैदा होगी। वैसे मुझे लग रहा है कि कौरोना वायरस ख़त्म होने के बाद कहीं जंगों के हालात न शुरू हो जाएं। और फिर हालात नॉर्मल होते होते कई साल लग जाऐंगे। इसलिए हमें दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह न करे कि जंगों के हालात हों और जो दुनिया के लीडर हैं वह अक़्ल करें और यह कोशिश करें कि जल्दी से जल्दी नॉर्मल हालात क़ायम हो जाएं। लेकिन इसके लिए यही है कि अल्लाह की तरफ़ रुजू करना पड़ेगा। अगर अल्लाह की तरफ़ रुजू नहीं करेंगे तो फिर कोई और वबा, कोई और बला, कोई और चीज़ उन पर आएगी और फिर उनको मार पड़ेगी। तो जब तक यह लोग अल्लाह तआला की तरफ़ नहीं झुकते, अल्लाह के हुक़ूक़ अदा नहीं करते और उसके बंदों के हक़ अदा नहीं करते उस वक़्त तक हालात नॉर्मल नहीं हो सकते। इसलिए हम अहमदियों को भी ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करनी चाहिए, तब्लीग़ करनी चाहिए और लोगों को बताना चाहिए कि दुनिया के हालात नॉर्मल करने के लिए एक ही ईलाज है कि तुम अल्लाह तआला की तरफ़ झुको, अल्लाह तआला की तरफ़ वापस आ जाओ, अल्लाह तआला के हक़ अदा करने वाले बनो और उसके बंदों के हक़ अदा करने वाले बनो। ठीक है?

बुनियादी मसाइल के जवाबात (नंबर-23)

प्रश्न : एक नौजवान ने अहमदीयत के बारे में तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के लिबास और आप के ज़ेर-ए-इस्तेमाल कुछ वस्तुओं के बारे में मुतफ़र्रिक़ इस्तफ़सारात हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में तहरीर किए। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 23 मार्च 2020 ई. में इन प्रश्नों के निमंलिखित उत्तर इरशाद फ़रमाए। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : अहादीस में मुख़्तलिफ़ सहाबा से मर्वी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इमामा का इस्तिमाल फ़रमाया करते थे। इसलिए हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़तह मक्का के दिन मक्का में दाख़िल हुए तो आप के सिर मुबारक पर स्याह इमामा था।

इसी तरह हज़रत अमर बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों से ख़िताब फ़रमाया और आपके सिर मुबारक पर काला इमामा था। (सही मुस्लिम किताबुल हज बाब جَوَازِ دُخُولِ مَكَّةَ بِغَيْرِ إِحْرَامٍ)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस सुन्नत का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ते-बंद भी बाँधा करते थे और सरावील भी ख़रीदना आपका साबित है जिसे हम पाजामा या ते-बंदी कहते हैं ... इलावा अज़ीं टोपी। कुरता। चादर और पगड़ी भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आदत मुबारक थी।" (अल्-हकम नंबर 14 भाग 7 तिथि 17 अप्रैल 1903 ई. पृष्ठ : 8)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने आक़ा-ओ-मुता हज़रत-ए-अक़्दस हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हक़ीक़ी आशिक़, आपके कामिल मतबा और सच्चे ग़ुलाम थे। अतः आप अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत के मुताबिक़ पगड़ी का इस्तिमाल फ़रमाया।

बाक़ी जहां तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पगड़ी पहनने की बजाय बालों की knot बनाने की बात है तो इस बारे में याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आला दर्जा की इताअत और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हद दर्जा की मुहब्बत के नतीजे में ज़िललली और उम्मती नबी के मुक़ाम पर फ़ायज़ फ़रमाया। अंबिया ख़ुदा तआला के शायर में से हैं जिनका अदब और एहतराम हम पर वाजिब है। अतः अनबया की ज़ात के बारे में इस किस्म के प्रश्न उनकी शान के ख़िलाफ़ मुतसव्वर होते हैं।

ख़ुद ब ख़ुद चलने वाले पेन वाली बात ग़लत है। न हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास ऐसा कोई पेन था और न मेरे पास है। हाँ अल्लाह तआला का अपने प्यारों के साथ ऐसा ताल्लुक़ होता है कि वह हर मुआमले में ख़ुद उनकी राहनुमाई करता है। और अल्लाह तआला का यही ताल्लुक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपके खलिफ़ा के साथ है।

जहां तक अहमदिया कम्यूनिटी का ताल्लुक़ है तो यह कोई नया मज़हब नहीं है। बल्कि इस्लाम की हक़ीक़ी जमात है। जिसे अल्लाह तआला ने इस्लाम के संस्थापक हज़रत-ए-अक़्दस हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के ऐन मुताबिक़ क़ायम फ़रमाया है।

जिस तरह अल्लाह तआला दुनिया की इस्लाह और बेहतरी के लिए पहले वक़्तों में मुख़्तलिफ़ इलाक़ों और मुख़्तलिफ़ ज़मानों में अंबिया अवतरित करता रहा है और लोगों की राहनुमाई के लिए उन्हें तालीमात से नवाज़ता रहा है। इसी तरह उसने हमारे आक़ा-ओ-मुता मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 08 December 2022 Issue No. 49

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

सल्लम को सारी दुनिया की हिदायत के लिए अवतरित फ़रमाया और क़ियामत तक क़ायम रहने वाली दाइमी तालीम क़ुरआन-ए-करीम का आप पर नजूल फ़रमाया।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला से ख़बर पाकर भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि एक वक़्त आएगा जब उम्मत मुस्लिमा में बिगाड़ पैदा हो जाएगा और मुस्लमान इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम से दूर हो जाऐंगे। ऐसे वक़्त में अल्लाह तआला इस उम्मत पर रहम फ़रमाते हुए उसकी राहनुमाई लिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ही मुतबईन में से आपके एक ग़ुलाम सादिक़ को खड़ा करेगा जो लोगों को इस तालीम पर क़ायम करेगा जो अल्लाह ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर नाज़िल फ़रमाई थी और जिसकी तशरीह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने अक़्वाल-ओ-अफ़आल से फ़रमाई थी।

इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी सारी ज़िंदगी इस ज़िम्मेदारी को निभाने में सिर्फ फ़रमाई। आपके विसाल के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ही भविष्यवाणी के मुताबिक़ जमाअत अहमदिया में ख़िलाफ़त का बाबरकत सिलसिला जारी हुआ और जमाअत अहमदिया अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ख़िलाफ़त के बाबरकत साय में इस्लाम का पुरअमन पैग़ाम और उसकी ख़ूबसूरत तालीम सारी दुनिया में पहुंचाने पर कमरबस्ता है।

अतः अहमदिया कम्यूनिटी किसी इन्सान का बनाया हुआ इदारा नहीं जिसके सादा होने या न होने पर बात की जाए बल्कि यह अल्लाह तआला का लगाया हुआ एक पौधा है जो उसी की दी हुई तालीमात इन्सानों की भलाई के लिए दुनिया में फैलाने में कोशां है।

बुराई और अच्छाई के बारे में आपके प्रश्न का उत्तर यह है कि बुराई और अच्छाई का मयार क्या है? हो सकता है कि एक बात आपके नज़दीक बुरी हो लेकिन किसी दूसरे के नज़दीक अच्छी हो। और दुनिया में इसकी कई मिसालें मिल सकती हैं। लेकिन मज़हब की दुनिया में जिन बातों के करने का ख़ुदा तआला ने हुक्म दिया वह अच्छाई है और जिन बातों से अल्लाह तआला ने मना फ़रमाया वह बुराई है, जिसे इस्लामी इस्तिलाह में अवामिर-ओ-नवाही कहा जाता है। और एक मुस्लमान से तवक़्क़ो की जाती है कि वह इन अवामिर-ओ-नवाही पर कारबंद हो। अर्थात जिन बातों के करने का अल्लाह तआला और उसके रसूल ने हुक्म दिया उनको बजा लाए और जिन बातों से अल्लाह और उसके रसूल ने मना फ़रमाया उन को तर्क कर दे। उसके इसी किस्म के आमाल के मुताबिक़ उस से मुआमला किया जाएगा।

जहां तक दूसरे मज़ाहिब के लोगों का ताल्लुक़ है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उनमें से जिसने भी कोई नेक अमल किया है अल्लाह तआला इसे हरगिज़ ज़ाए नहीं करेगा। इसलिए एक फ़ाहिशा औरत के प्यासे कुत्ते को पानी पिलाने पर अल्लाह तआला ने उस औरत को माफ़ कर दिया और उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया। यह इसलिए है कि अल्लाह तआला रहम पर मबनी सिफ़ात का भी मालिक है और जब चाहे वह उन्हें प्रयोग करने पर क़ादिर है।

बाक़ी आपके कूड़ा उठाने पर जिन्हों ने एतराज़ किया है, उनकी बात ग़लत है। जमाअत अहमदिया में तो ऐसे काम के लिए वक़ार अमल के शब्दों इस्तिमाल किए जाते हैं। अर्थात ऐसा काम जिसके करने से इन्सान का वक़ार और इज़्ज़त बढ़ती है। अपने इलाक़े और माहौल को साफ़ रखना तो एक बहुत अच्छी आदत है जिसका अल्लाह तआला और के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी हुक्म दिया है। मैं ने ख़ुद भी कई दफ़ा वक़ार-ए-अमल के तहत कूड़ा क्रकट उठाया है और गंदी नालियां साफ़ की हैं।

सफ़ाई करने और कूड़ा क्रकट उठाने से हरगिज़ इज़्ज़त नहीं जाती। इज़्ज़त तो अल्लाह तआला के हाथ में है और इस के हुक्मों की ख़िलाफ़वरज़ी करने से इज़्ज़त जाती है। लिहाज़ा हमें हमेशा अल्लाह तआला के अहकामात पर अमल पैरा होने की कोशिश करते रहना चाहिए।

प्रश्न: एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा कि आम ज़रूरत की अशीया की फ़रोख़्त के कारोबार में अशीया की क़ीमत क़िस्तों में अदा करने वालों से आम क़ीमत से कुछ ज़्यादा लेना सूद तो नहीं? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 30 मार्च 2020 में इस प्रश्न का निमंलिखित जवाब अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : आप अपने कारोबार में चीज़ ख़रीदने वालों को अगर पहले बता दें कि नक़द की सूरत में इस चीज़ की इतनी क़ीमत होगी और अगर वह इसी चीज़ की क़ीमत क़िस्तों में अदा करेंगे तो उन्हें इतने पैसे ज़्यादा देने पड़ेंगे तो इस में कोई हर्ज नहीं और यह सूद के ज़ुमरे में नहीं आता। क्योंकि इस सूरत में आपको क़िस्तों में चीज़ें ख़रीदने वालों का बाक़ायदा हिसाब रखना पड़ेगा और हो सकता है कि उन्हें उनकी क़िस्तों की अदायगी के लिए याद देहानियां भी करवानी पड़ें, जिस पर बहरहाल आपका वक़्त खर्च होगा और दुनिया वह कामों में वक़्त की भी एक क़ीमत होती है। इसलिए मुलाज़मत पेशा लोग अपने वक़्त ही की बड़ी-बड़ी तनख़्वाहें लेते हैं।

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में किसी अख़बार में शाय होने वाला एक औरत का वाक़िया कि उसने अपने ख़ावंद को उस के शराब के नशे में धुत होने की वजह से हमबिस्तरी से इंकार कर दिया, वर्णन कर के दरयाफ़त किया है कि अगर मियां बीवी में से एक फ़रीक़ नशे में हो तो क्या बाहम मुहब्बत के जज़बात क़ायम रह सकते हैं? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 30 मार्च 2020 में इस मसला के बारे में निमंलिखित इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया

उत्तर : ऐसी सूरत में प्रश्न मुहब्बत के जज़बात क़ायम रहने या ना रहने का नहीं बल्कि सलीम फ़ित्रत की बात है। इसलिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में फ़िरऔन की बीवी की इस दुआ को हमारे लिए महफ़ूज़ करके हमारी राहनुमाई फ़रमाई है कि

رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ

अर्थात : हे ख़ुदा तू अपने पास एक घर जन्नत में मेरे लिए भी बना दे और मुझे फ़िरऔन और उस की बदआमालियों से बचा ले।

इस आयत से वाज़िह होता है कि फ़िरऔन की बीवी फ़िरऔन से अलैहदगी लेने में बहरहाल मजबूर थी जो उसने ख़ुदा के हुज़ूर यह इल्तिजा की।

शेष पृष्ठ 10 पर

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad